ब्राह्मी सिक्के कैसे पढें

How to Study the Brahmi Coins

ब्राह्मी टीचर

Brahmi Teacher

By : Pradip Dattuji Wankar

ब्राह्मी सिक्के कैसे पढें

How to Study the Brahmi Coins

Issued on the occassion of the
92nd Annual Conference of the Numismatic Society of India,
In Indore

ब्राह्मी टीचर

Brahmi Teacher

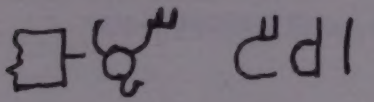

By : Pradip Dattuji Wankar

Chandrapur Coin Society

ब्राह्मी सिक्के कैसे पढें

How to Study the Brahmi Coins

ब्राह्मी टीचर

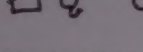

Brahmi Teacher

By : Pradip Dattuji Wankar

1st Edition 2008

Published By : Chandrapur Coin Society, Chandrapur

Printed At : United Printing Press, Chandrapur (I

Distributer : Heritage Coin World,
Jatpura Gate, Ward No. -1
Chandrapur (M.S.)
Mo. 09226129574

All Rights Reserved.
No. part of this publication may be reproduced in any form
any means, including photocopying (Xerox), without the e
permission of the author.

आदरणीय गुरुवर्य
श्री. आर. एम. सकलेचा
तथा
श्रीमती चंदादेवी आर. सकलेचा
को
सादर समर्पित

Dedicated to
My Guru Shri. R. M. Saklecha and
Smt. Chandadevi R. Saklecha

Pradip Duttuji Wankar

Contents

1. Foreword
2. Preface
3. Thanks
4. Indian History - A Curtain Raiser
5. Brahmi-the Oldest Script of India
6. Alphabets
7. Use of Strokes (Matras) in Brahmi
8. Use of Conjunction in Brahmi Script
9. Brahmi Barakhadi
10. Brahmi Lipi
    Maurya , Post Maurya, Kushana,
    Satavahana, Kshatrapas & Gupta
11. Gupta Gold Coins Legunt
12. Western Kshatrapas coins Language (Brahmi)
13. Name of the Kshatrapas Kings & Title Common Words
14. Ancient Indian Numerals Type
15. Ancient Numerals Chart
16. Hieroglyphic & Semitic Ancient Indian Numerals Chart
17. Ancient Numerals
18. Annexure 1
19. Annexure 2
20. Exercise
21. Further Reading

Contents

प्राचीन भारतीय इतिहास, संस्कृति आणि पुरातत्त्व विभाग

राष्ट्रसंत तुकडोजी महाराज नागपूर विद्यापीठ

(सेंट्रल प्रोव्हिंसेस शासन, शिक्षण विभागाची अधिसूचना क्रमांक ५१३ विनांक १ ऑगस्ट, १९२३ द्वारा स्थापित व महाराष्ट्र विद्यापीठ अधिनियम, १९९४ द्वारा संचालित राज्य विद्यापीठ)

प्रस्तावना

श्री प्रदीप दत्तुजी वनकर द्वारा लिखित ब्राह्मी टिचर की प्रस्तावना लिखते हुए मुझे अत्यंत आनंद का अनुभव हो रहा है। वह प्राचीन भारतीय इतिहास, संस्कृति के अध्ययन में रुची रखते हैं, यद्यपि उनकी विशेष रुची प्राचीन सिक्कों में अधिक है । वह चंद्रपुर मुद्रा परिषद के सह सचिव तथा इंटॅक चॅप्टर चंद्रपुर के आजीवन सदस्य हैं। 'Regular Commemorative Coins of Republic India' शीर्षक से उनकी पहली पुस्तक प्रकाशित हो चुकी है। जिसका सिक्कों के संग्राहकों द्वारा अच्छा स्वागत हुआ है। केवल राजाओं से संबध्द इतिहास के लिए नही, वरन् शासन पध्दति के इतिहास का ज्ञान प्राप्त करने के लिये भी मुद्राशास्त्र तथा प्राचीन लिपीयों का ज्ञान जरुरी है। हमारे देश में जहां प्राचीन काल का लिखा हुआ इतिहास नहीं मिलता उनके लिये वहाँ के प्राचीन सिक्के भी बहुत ही महत्वपूर्ण और काम के हैं। जो बातें शिलालेखों आदि में नहीं मिलती, उनकी बहुत कुछ पूर्ती सिक्के कर देते हैं। मुद्राशास्त्र का महत्व विविध दृष्टियों से स्वयं सिध्द है, किंतु उसके अध्ययन के लिये सामग्री प्राय: सुलभ नहीं है। नए इतिहास प्रेमी लोग मुद्राशास्त्र जैसे दुर्गम क्षेत्र में प्रवेश कर सकें तथा सिक्कों के संग्रहकर्ताओं का उनपर लिखे लेख पढने में सहायक सिध्द हो इसी उददेश्य की पूर्ती के लिए प्रस्तुत पुस्तक की रचना हुई है। आशा है कि इस ग्रंथ से विव्दत जगत को न अमित संतोष होगा अपितु उन्हें अनुशीलन की दिशा में आगे बढने की प्रचुर प्रेरणा भी मिलेगी।

विनिमय के काम को सरल बनाने के लिए विनिमय का स्थायी समाधान निकाला गया। विनिमय के इसी साधन अथवा उपकरण का नाम मुद्रा या सिक्का है। यद्यपि सिक्के छोटे होते है और उनपर बहुत ही छोटे-छोटे लेख लिखे रहते हैं, जो बडे

महत्व के होते है। जिसे पढना बहुत ही कठिन कार्य है। जिसके लिये प्राचीन लिपीयों और भाषाओं का ज्ञान होना आवश्यक है। प्राचीन सिक्कों तथा लिपीयों पर अंग्रेजी-हिंदी में कई किताबें लिखी गई. लेकिन अभी तक सिक्कों पर लिखे लेख कैसे पढे जाए इस ओर विद्वानों का ध्यान पर्याप्त मात्रा में नही गया था। हिंदी भाषा में मुद्राशास्त्र पर प्रकाशित होनेवाली यह पहली पुस्तक है। जो इस विषय की त्रुटि के एक अंश की पूर्ती करती है। लेखक इस दृष्टि से निश्चित ही बधाई के पात्र है।

प्राचीन भारत के इतिहास लेखन में सिक्कों या मुद्राओं का एक स्त्रोत के रुप में कितना अधिक योगदान है यह सर्वविदित है। कई राजाओं के नाम तो सिक्कों के कारण ही ज्ञात हुए हैं। उनके सिक्के अगर प्राप्त नहीं होते तो हम उनके नाम तक नहीं जान पाते। यह एक ऐसा अध्ययन क्षेत्र है जिसमे विरले ही रुची रखते है। उनमें अधिकांश ऐसे भी हैं जिनकी यह हॉबी है, ऐसे लोगों के ज्ञान संवर्धन में यह पुस्तक बहुत अधिक सहायक सिध्द होगी। साथ ही जानकारों के लिए शोध की दिशा में मार्ग भी प्रशस्त करेगी।

लेखक ने प्रस्तुत पुस्तक में विवादित मुद्दों को न छेडते हुए सिक्कों पर अंकित ब्राह्मी लिपी के लेख पढने की तरफ विशेष ध्यान दिया है। भारतीय इतिहास के प्रत्येक काल के भिन्न-भिन्न राजवंशो के सिक्कों पर अंकित अभिलेखों का विस्तृत विवरण इसमे दिया गया है। भारतवर्ष के विभिन्न युगों और स्वतंत्र राजवंशों के सिक्कों के लेखों की अलग-अलग तालिकाएँ दी हैं। भिन्न-भिन्न राजवंशो के काल में ब्राह्मी लिपी तथा अंको में जो बदलाव आये उसका प्रतिबिंब उनके सिक्कों पर भी देखने को मिलता है। लेखक ने बखूबी उसे अनेक चार्ट तथा परिशिष्ट के रुप में प्रस्तुत किया है। जो अद्वितीय है। मुझे विश्वास है कि प्राचीन सिक्कों के संग्रहकर्ता इससे निश्चित ही लाभान्वित होंगे। इस पुस्तक का प्राचीन लिपीयों के अध्ययनकर्ता, भाषा प्रेमी, शोधकर्ता समुचित स्वागत कर प्रदीप वनकर जैसे मीतभाषी में छिपे एक होनहार, प्रतिभा संपन्न संशोधक का उत्साह वर्धनकरेंगे।

दिनांक : ३/९/२००८

डॉ. प्रदीप मेश्राम
प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष
प्राचीन भारतीय इतिहास, संस्कृती व पुरातत्व विभाग,
राष्ट्रसंत तुकडोजी महाराज नागपूर विद्यापीठ,
नागपूर.

Deptt. of A.I.H.C. & Archasology
Rashtrasnt Tukadoji Maharaj
Nagpur University, Nagpur.

Foreword

I am feeling extremely joyous writing the foreword of the 'Brahmi Teacher' of Shri Pradip Dattuji Wankar. He is interested in the study of Ancient Indian History and Culture though he is more interested in the ancient coins. He is Jt-Secretary of 'Chandrapur Coin Society' and life member of INTAC chapter, Chandrapur. His first book published earlier "Regular Commemorative Coins of Republic India" was widely acclaimed by the coin collectors. The knowledge of numismatics and the ancient scripts is must, not only for the history of various rulers but also for the history of Administrative system during the period. In the countries like ours, where the wrinten history is not available for ancient period, the ancient coins are valuable and of great importance to us as they fill up the gaps in the information derived from in scriptions. The importance of Numismatics is self explanatory on various accounts but the materials for their study are scarce. The aim of this book is to help the new generation interested in the history of numismatics and to help coin collectors to derive information from the coins. I hope that this present work will not only satisfy the scholars but it will also inspire them to move ahead in their quest for more knowledge.

To make the exchange process simple, a permanent solution was found out and this source or instrument of exchange was coins. Though the coins are smaller in size and information are very short, they are of great importance, but at the same time extremely difficult to read and understand and here one requires the knowledge of ancient scripts and languages. Many books in

english and hindi have been published on ancient coins and scripts but very few tried their hands in writing a book on how to read scripts. This is the first book in hindi on numismatics which fulfills a part of this field and the author rightly deserves compliments on this accout.

The importance of ancient coins and currencies in writing the history of ancient India is well know The name of many rulers came to light from the coins only and if these were not found their names would not have been known to us. This is one field of study in which very rarely one enters and for most of them it is only a hobby and for these people this book will serve as a knowledge bank and will sure show a new path to the research scholars.

The auther has avoided the controvercial issues and has concentrated into reading the inscribed matter of the ancient coins writen using Brahmi Script.

This book provides valuable information on different periods of Indian history through the coins of different dynastic rules where inscribed matter on coins are sources of great information. Seperate tables have been given for information on coins of independent rulers of different periods. The changes that took place in Brahmi Script and numerals during different dynastic rules are very clear from the coins and the author has put them nicely in the form of charts and annexure which are beyond comparison. I am sure that the collectors of ancient coins will be greatly benefitted by this work. The scholars, researchers, linguist will surely welcome this work and they will encourage this talented, prospering researcher, Shri Pradip Wankar

Dr. Shri Pradip Meshram
Reader & Head
Deptt. of A.I.H.C. & Archaeology
Rashtrasant Tukadoji Maharaj
Nagpur University,
Nagpur

लेखक के विचार

कॉलेज में अध्ययन के समय मुझे ब्राह्मी भाषा की एक किताब पढने का अवसर मिला जिसका शीर्षक ब्रह्मदत्त अगडदत्त य: था। यह किताब गद्य और पद्य दोनों में लिखी गई थी और साथ में उसका हिन्दी अनुवाद भी था। इस किताब को पढने के पश्चात मेरे मन में ब्राह्मी लिपि का अध्ययन करने की तीव्र इच्छा उत्पन्न हुई और मैने बहुत प्रयास किया कि कोई मुझे पढाये परंतु मै जिनके भी पास गया उन्होने कोई न कोई बहाना बनाकर टाल दिया। इससे मेरी इच्छा और तीव्र हो गई इसी बीच मैंने प्राचीन सिक्कों को संग्रहित करने का कार्य आरंभ किया जिसके दौरान मुझे प्राचीन भारत के इतिहास और संस्कृति को करीब से जानने की लालसा उत्पन्न हुई।

प्राचीन भारत के इतिहास और संस्कृति को सही रुप में जानने के लिए ब्राह्मी और खरोष्ठी लिपि का ज्ञान अत्यावश्यक है। ३ री ४ थी शताब्दी ई पू. से लेकर ई.स. १५ वी शताब्दी तक इसका अत्यधिक प्रयोग हुआ। समय के साथ-साथ इस लिपि में काफी बदलाव आए। इससे संबंधित जो भी किताबें मुझे मिली, मैंने उनका अध्ययन किया। इसी बीच मुझे नासिक जिले के अंजनेरी स्थित इंडियन इंस्टीट्युट ऑफ रिसर्च इन न्युमिस्मेटिक स्टडीज़ में प्राचीन भाषाओं का अध्ययन करने का सुअवसर प्राप्त हुआ। यहाँ डा. अमितेश्वरी झा और रेहान अहमद सर के कुशल मार्गदर्शन में मैने ब्राह्मी लिपि का विशेष अध्ययन किया और उसी समय से मेरे मन में ब्राह्मी लिपि के बारे में ऐसी किताब लिखने की इच्छा हुई जिस की सहायता से लोग आसानी से घर बैठे ही ब्राह्मी लिपि का ज्ञान अर्जित कर सकें। कुछ ही समय पश्चात मुझे अखिल भारतीय ऐतिहासिक पुरातत्वीय बुद्धिस्ट अनुसंधान केन्द्र, मनसर जि. नागपुर के डॉ. प्रदीप शालिकराम मेश्राम और प्रो. धीरज चौधरी द्वारा रचित आओ ब्राह्मी लिपि सीखें नामक पुस्तक पढने को मिली । इस पुस्तक में शिलालेखों, गुहालेखों को पढने, उनके प्रिंट लेने आदि के बारे में उपयोगी जानकारी प्राप्त हुई, इसी से मुझे ब्राह्मी लिपि में लिखे लेख वाले प्राचीन सिक्कों पर ब्राह्मी भाषा में एक किताब लिखने का विचार आया और मैंने यह विचार मेरे गुरु आदरणीय श्री आर. एम. सकलेचा एवं अग्रज तुल्य श्री अशोक सिंह ठाकुर जी को बताई। वे हर्षित हुए और मेरा उत्साह वर्धन करते हुए इस कार्य हेतु हर प्रकार की सहायता का आश्वासन दिया। उनकें स्नेह और प्रोत्साहन के परिणाम स्वरुप ही यह किताब आकार ले सकी।

मुझे पुर्ण विश्वास है कि प्राचीन सिक्कों के संग्रहकर्ताओं, ब्राह्मी भाषा के अध्ययन की ईच्छा रखने वालों एवं भारत के सांस्कृतिक इतिहास में रुचि रखने वालों के लिए यह पुस्तक मील का पत्थर साबित होगी।

मैंने इस किताब की रचना में सर्वसम्मत मतों को ही आधार बनाया है। इस लिपि में समय-समय पर आए बदलाव और इसके विकास क्रम को सरलता से समझाने के लिए किताब के। अंत में काल क्रमानुसार तैयार किए गए चार्ट आदि प्रस्तुत किए हैं ताकि अध्ययनकर्ताओं को सहज ज्ञान प्राप्त हो सके।

इस पुस्तक में पूर्ण सावधानी के उपरांत भी कुछ त्रुटियाँ रह जाना स्वाभाविक है। विद्वान जनों से नम्र निवेदन ह कि वे उसकी जानकारी देने की कृपा करें ताकि आगामी संस्करणों में सुधार किया जा सके।

मुझे आशा है कि मेरे इस छोटे से प्रयास का, इस क्षेत्र में कार्यरत विद्वान यथोचित स्वागत करेंगे।

भारतीय इतिहास एवं संस्कृति का अध्ययन करने वालों को इस पुष्प से थोडी सी भी सहायता मिली तो मेरा परिश्रम सार्थक हुआ ऐसा समझूँगा।

विनम्र
प्रदीप दत्तुजी वनकर

PREFACE

During my college days I came accross a book in brahmi titled 'Brahmadutta Agadattya' This book in Brahmi was written both in prose and poetry and was also translated in hindi. After reading the book, there arose a great desire in me to learn about brahmi script. I tried to get some one to teach me but all refused citing one or the other reason. My interest grew even stronger and in the meantime I started collecting coins of ancient period and got interested to acquire indepth knowledge of ancient Indian history and culture.

It is essential to have complete knowledge of Brahmi and kharoshti scripts to understand the ancient indian history and culture in the right prospect. It was widely used between the period 3rd & 4th century B.C. and upto 15the century A.D. Many changes occurred in the script during this long period. I went through all the available literature on the subject though they were very few in number. At this juncture, luckily, I got a chance to study ancient Indian language at Indian Institute of Research in Numismatic Studies, Anjaneri, Dist Nashik. Here, under the able guidance of Dr. Amiteshwari Jha and Rehan Ahmed Sir I made a special study to learn Brahmi script. That time only I decied to bring out a book, in simple language, to help people to learn Brahmi script. sitting at home. After some time I came accross a book 'Let us learn Brahmi Script' written by Dr. Pradip Shalikram Meshram and prof. Dhiraj Chaudhari of 'All India Historical Archaeological Buddhist Research Institute, Mansar, Dist. Nagpur. This book provided a valuable knowledge about reading Inscriptions, cave Inscriptions and taking their prints. This inspired me to publish a book on coins of that period in Brahmi and I shared this thought with my Guru Respected Shri R.M. Saklecha and elder brother like Shri Ashok singh Thakur, both were very pleased and encouraged me to go ahead and assured their full cooperation for the same. And it was due to their encouragement and affection that I could complete this book.

I have full confidence that this book will prove to be a mile stone for coin collectors, those interested in learning Brahmi script and also for those who want to study ancient Indian history and culture.

I have avoided controvercies and have utilized only widely accepted views in my work.

To help the readers to understand the changes that took place during the different developmental stages easily, I have given some charts with specific period of use.

Due care has been taken to avoid any mistake but possiblity of few can not be denied. And I request all the scholars to convey me the same so that they are corrected in the future editions.

I hope that this small effort on my part will be welcomed by the scholars in the field.

My work will be rewarded if it proves to be even of small help to all those studying ancient Indian history and culture.

Pradeep Dattuji Wankar

आभार

इस पुस्तक की रचना में अनेक ग्रंथों की सहायता ली गई है और मैं उन सभी लेखकों का हृदय से आभारी हूँ। ब्राह्मी लिपि का मुझे ज्ञान कराने वाले आय. आय. आर. एन. एस. अंजनेरी, जिला-नासिक के डा. अमितेश्वरी झा एवं श्री रेहान अहमद जी का भी आभारी हूँ जिनके प्रोत्साहन से यह पुस्तक साकार हो सकी व गुरु श्री आर.एम. सकलेचा, बडे भ्राता अशोक सिंह ठाकुर एवं डॉ. प्रदीप मेश्राम के प्रति भी मैं आभार प्रगट करता हूँ।

इस पुस्तक की साज-सज्जा करने वाले सभी व्यक्तियों एवं अल्पावधि में गुणवत्तायुक्त छपाई के लिए श्री विट्ठलदासजी मुरके एवं युनाईटेड प्रिंटर्स के उनके कर्मचारियों का भी हृदय से आभारी हूँ। इस पुस्तक को त्रुटिरहित बनाने तथा हिन्दी अनुवाद हेतु जिन्होंने दिन-रात एक कर के पुस्तक में जान लाई वो हमारे मित्र श्री राजेश कमाने जी का आभार न मानता मेरी कृतघ्नता होगी। मैं उनका भी हृदय से आभारी हूँ। इस पुस्तक की टायपिंग का कार्य जिन्होंने दिल लगाकर किया वे श्री मनोज जाधव जी का भी मैं आभारी हूँ । इसके अतिरिक्त, उन सभी प्रबुद्ध जनों का जिन्होंने इस परिश्रम में प्रत्यक्ष या परोक्ष रुप से सहयोग दिया है उन सबका भी तहे दिल से आभारी हूँ।

विनम्र
प्रदीप दत्तुजी वनकर

THANKS

I thank all those whose work have been consulted by me to complete this book. At this moment I pay my deep regards to Dr. Amiteshwari Jha and Shri Rehan Ahmed and I.I.R.N.S., Anjaneri, dist-Nashik I take this oppertunity to thank my Guru Shri R.M. Saklecha & elder brother Shri Ashok Singh Thakur without whose cooperation this work would not have been completed.

I also thank all those who were involved in designing work and Shri Vitthaldasji Murke and his staff at United Printing Press for Printing this book in short period. Not to acknowledge the hard work of my friend Shri Rajesh Kamane who worked day and night to translate the work in hindi and to make this book flawless will be my ingratitude. I thank him from my heart. I also thank Shri Manoj Jadhao who shouldered the responsibility of typing the book whole heartedly. Apart from this, my thanks are due to all those who have directly or indirectly helped me in completing this work.

Pradeep Dattuji Wankar

४ भारतीय इतिहास का पुर्वावलोकन

भारत एक विशाल देश है जिसे उपमहाद्वीप भी कहा जाता है। इस देश का इतिहास बहुत ही गौरवशाली रहा है। परिवर्तनशीलता समाज का मूल सिध्दांत है जिसे डार्विन ने 'उत्क्रांती का सिध्दांत' के नाम से प्रतिपादित किया। भारत जैसे विशाल राष्ट्र में अनेक राजवशों का उदय हुआ और समय समय पर अस्त होते गए। इन राजवशों का इतिहास और प्राचीन संस्कृति का यदि आपको अध्ययन करना हो तो उसके लिए पुरालेखों (Inscriptions, Epigraphs) सिक्कों (coins) का महत्व निर्विवाद रुप से स्पष्ट है। यह लेख उस काल के राज्यों की संस्कृति, अर्थ व्यवस्था एवं शासन व्यवस्था आदि पर प्रकाश डालते हैं।

इतिहास संशोधकों तथा विद्यार्थियों को यदि भारत के प्राचीन गौरवशाली इतिहास का अध्ययन करना हो तो, उन्हें भारतीय पुरालिपियों (Ancient Writing) का ज्ञान होना अत्यावश्यक है तभी वो सिक्कों पर के लेख, शिलालेख, तांब्रपट्ट, मृतिकापट्ट (Terrcotta) इत्यादि स्वयं पढ पाएंगे और उनका विस्तृत अध्ययन कर पाएंगे।

प्राचीन भारत वर्ष का इतिहास यदि जानना चाहते हैं तो भारतीय इतिहास के जो साधन हैं उन्हें पहले समझना होगा। भारत के इतिहास के साधन इस प्रकार हैं १) हस्तलिखित २) तांब्रपट्ट ३) शिलालेख ४) गुहा लेख ५) सिक्के ६) ताडपत्र आदि।

यह भारत का दुर्भाग्य ही कहा जाएगा कि हस्तलिखित सामग्रियाँ जिससे हमें विस्तृत जानकारी मिल सकती थी वह आज हमारे पास उपलब्ध नहीं हैं। शिलालेख, गुहालेख, सिक्के, मृतपट्टिका समुचित संख्या में प्राप्त हो रहे हैं। इन सबका अध्ययन करने के लिए पुरा लिपि शास्त्रों का ज्ञान होना अत्यावश्यक है तभी वे उनका अध्ययन कर सकेंगे।

पैलिओग्राफी (Epigraphy, Palaeography) रोचक एवं हृदय स्पर्शी विषय है। अपने पूर्वजों का इतिहास, उनके काल की संस्कृति, उनके ज्ञान आदि के बारे में जानना और उसका प्रचार करना मानव जीवन का अभिन्न अंग है।

मनुष्य ने लिखने की कला का आविष्कार करके मानव के विकास के मार्ग को प्रशस्त किया।

सिंधु सभ्यता की लिपि प्रकाश में आने के पूर्व इतिहासकार मौर्यकाल के अभिलेखों तक आकर रुक जाते थे। सिंधु लिपि सन १९२१ में प्रकाश में आई। मोहन जोदड़ो और हड़प्पा के उत्खनन से यह सिध्द हो गया कि ई.सा. पूर्व ४००० वर्ष पहले

भारत में लिपि शास्त्र था और सिंधु लिपि को भारत की प्राचीनतम लिपि भी कहा जा सकता है। सिंधु घाटी के उत्खनन में उस संस्कृति के जो उत्कीर्ण लेख मिले हैं उन्हें पूरी तरह से पढने में किसी भी विद्वान को अब तक सफलता नहीं मिल पाई है।

भारत में प्राचीन काल से ही लेखन कला का ज्ञान था यह तो उत्खनन से प्राप्त शिलालेखों, तांब्रपट्ट और सिक्कों पर उत्कीर्ण लेखों से निर्विवाद रुप से सिध्द हो गया है किन्तु पूर्व में इतिहासकार इसकी लिपि के बारे में एक मत नही थे बाद में सर्वसम्मति से उस लिपि को ब्राह्मी लिपि माना गया। इस लिपि का प्रत्येक अक्षर एक ही ध्वनि का उच्चारण करता है जो समझने में सरल और पूर्ण रुप से वैज्ञानिक लिपि है।

इस विशाल देश में भिन्न-भिन्न लेखकों और इतिहासकारों ने भिन्न-भिन्न मार्ग अपनाए जिसके परिणामस्वरुप ब्राह्मी लिपि से अनेक प्रादेशिक भाषाओं का उदय हुआ जिन्हें पढ पाना कालांतर में दुष्कर कार्य सिध्द हुआ। बड़े से बड़े विद्वान भी ७ वी और ८ वी शताब्दी तक की पांडुलिपियाँ ही पढ पाते थे। इसके पूर्व काल की लिपि पढ पाना उनके लिए असंभव था। फिरोजशाह तुगलक ने जब मेरठ और टोपारा के अशोक स्तंभों को दिल्ली मँगवाकर उन्हें पढने के लिए विद्वानों की सभा में रखवाया तो कोई भी विद्वान उन्हें पढ नहीं पाया। मुगल सम्राट अकबर को भी इन उत्कीर्ण लेखों का अर्थ जानने की जिज्ञासा थी परंतु उन्हें भी ऐसा कोई विद्वान नहीं मिला जो उन लेखों को पढकर उसका अर्थ समझा सके।

विलियम जोन्स के प्रयासों से जब १५ जनवरी १७८४ में एशियाटिक सोसायटी ऑफ बँगाल की नींव पडी तब लिपि विज्ञान में रुचि रखने वाले विद्वानों ने इसका भरपूर लाभ उठाया और आखिरकार एशियाटिक सोसायटी के सचिव एवं कलकत्ता टकसाल के अधिकारी श्री जेम्स प्रिंसेप ने सन १८३७ में ब्राह्मी लिपि को पढने में सफलता पाई और यह साबित किया कि अशोक के लेखों की भाषा संस्कृत नहीं वरन प्राकृत है।

भारत में जो शिलालेख मिले हैं वे ईसापूर्व ३ री शताब्दी के है और विशाल चट्टानों पर उत्कीर्ण हैं जिनकी लिपि ब्राह्मी एवं खरोष्टी है। ये लेख भारत के सभी भू-भागों में पाये गए हैं जिनसे सिध्द होता है कि लेखन कला का ज्ञान सभी क्षेत्रों में हो चुका था।

ब्राह्मी लिपि बाएँ से दायें पढी जाती थी जैसे आज देवनागरी पढी जाती है और खरोष्टी लिपि दायें से बाएँ पढी जाती थी जैसे उर्दू पढी जाती है। उस समय यही दो प्रमुख लिपियाँ थी।

4 INDIAN HISTORY - A CURTAIN RAISER

India is so large that it is also regarded as a sub continent. The history of India is very rich. Change is the basic principle of society which was proved by Darwin in his "Theory of Evolution." Many kingdoms and dynasties arose in India during different periods. The importance of Inscriptions, Epigraphs and coins is accepted by all for the study of history and culture of that period. These inscriptions and writings throw a great light over the culture, economy and administration of that period.

Those researchers and students who want to study about the rich Indian history and culture must acquire the knowledge of ancient writing, then only they will be able to read the contents of coins, inscriptions, terracotta and copper plates and make detailed study into them.

All those who want to have the knowledge of ancient Indian history should first acquaint themselves with the sources of it namely 1) Manuscripts 2) Copper plates 3) Inscriptions 4) cave Inscriptions 5) Coins and 6) Palm leaves etc.

It is a great loss to the country that manuscripts which could have been a great source of information of the contemparary period are not available with us. Inscriptions, Cave inscriptions, coins and terracottas are found in abundance. To understand them, one requires the knowledge of ancient script and writing system.

Palaeography and Epigraphy are the two very interesting branches of study in the field of history. To know the life and culture of our ancesstors and to expand it is our prime duty.

The invention of the art of writing revolutionzed the human life and opened the door to his progress.

Before coming to the light of Indins scripts, in the year 1921 A.D., the historians had knowledge upto Mauryan period only. The excavation at Mohan Jodaro and Harappa proved that the art of writing was prevalant in India in about 4000 B.C. and this script is regarded as the oldest Indian script. All the

inscriptions that are found in Indus valley excavation are only partially read as no scholar has succeeded so far in completely reading them.

Indians were familier with the art of writing since ages which is very clear from the writings on the coins, inscriptions and copper plates etc. But the historians were not at consensus over the script. Afterwards, it was unanimously accepted as Brahmi Script, each letter of which has the same sound making it easy to understand. It is the most scientific of all the scripts found so far.

In this country various writers and historians adopted different paths leading to the rise of many regional forms of the Brahmi Script thus making it very difficult to understand, during the latter period. Even the great scholars could read manuscripts of only upto the 7th-8th contury A.D. They were unable to read and understand the older ones. When Firuz Tughluk Ordered for bringing the Ashokan Inscriptions of Merrut and Topara to Delhi and Summoned the linguists and scholars to read them, none could do so. The same thing happened during the time of Akbar the great, here also none succeeded in reading them completely.

The efforts of William Jones led to the formation of Asiatic Society of Bengal on 15th January 1784, which greatly helped the scholars in their efforts resulting in the successful reading of the Brahmi alphabets, in the year 1837 A.D. by James Princep the then secretary of Asiatic Society and an officer of Calcutta Mint, thus clearly establishing that the language of Ashokan Inscription is Prakrit written in Brahmi Script and not Sanskrit as thought by earlier scholars and historians.

The Inscriptions found in India belong to the 3rd Century B.C. and are rock inscriptions in which the script is Brahmi and kharoshti. These inscriptions are found all over accross the country which proves that education was well spread by this time.

Brahmi Script was read from left to right like present days Devanagari where as the kharoshti was read from right to left like Urdu. Both of them were the main scripts of the period.

५ भारत की प्राचीनतम लिपि ब्राह्मी

ब्राह्मी लिपि भारत की प्राचीनतम लिपि है इसमें कोई दो राय नहीं है। यह लिपि वास्तव में देवनागरी लिपि का ही प्राचीन रुप है। पूर्व में कुछ युरोपियन विद्वानों ने इसका उल्लेख पाली, जाट आदि लिपि के नाम से किया है परंतु आज यह चहुँ ओर 'ब्राह्मी लिपि' के नाम से जानी जाती है।

प्राचीन भारत में कितनी लिपियाँ प्रचलित थी इनके बारे में अधिक जानकारी उपलब्ध नहीं है। ईसा पूर्व ३ री ४ थी शताब्दी के जैन एवं बौध्द धर्म ग्रंथों के अध्ययन से कुछ जानकारियाँ मिलती ह। जैन ग्रंथ पन्नवणा सत्र एंव समवयाँग सत्र में १८ लिपियों के नाम मिलते है जो इस प्रकार है :-

१) बंभी (ब्राह्मी) २) जवनालिया ३) दोसापुरिया ४) खरोष्टी ५) पुक्खसारिया ६) भोगदुया ७) पहाराइया ८) उयअंतरीक्खिया ९) अक्खरापीट्टिया १०) तेवनादुया ११) गिजहदुया १२) अंकलिवि १३) गणितलिवि १४) गंधव्यलिवि १५) आदंसलिवि १६) माहेसरी १७) दामिली १८) पोलिंदी।

इनमें से केवल ब्राह्मी और खरोष्टी लिपि के ही लेख मिले हैं। इसके क्या कारण हो सकते हैं? ऐसा लगता है कि ब्राम्ही और खरोष्टी लिपियाँ वैज्ञानिक लिपि होने के कारण सर्वमान्य होती गई और बाकी लिपियों का अस्तित्व समाप्त हो गया। कालांतर में ब्राह्मी ही एक मात्र लिपि रह गई जिसे राजमान्यता भी प्राप्त थी।

बौध्द धर्म के संस्कृत भाषा में लिखे ललित विस्तार नामक ग्रंथ में ६४ लिपियों के नाम मिलते है जिसमें पहला नाम ब्राह्मी और दूसरा खरोष्टी लिपि का है। यह ग्रंथ एक बुध्द चरित है परंतु इसका रचना काल स्पष्ट नहीं है। इसका चीनी भाषा में अनुवाद ईसवी सन् ३०८ में हुआ।

चिनी भाषा में बुध्द विश्वकोष ईसवी सन् ६६८ में तैयार किया गया जिसका नाम फा-युआ-चु-लिन है। इसमें अनेक लिपियों और भाषाओं की विस्तृत जानकारी दी गई है जिसमें ब्राह्मी लिपि प्रमुख लिपि है।

इस भाषा की उत्पत्ति के इतिहास की जानकारी प्राप्त करना दुर्लभ है लेकिन इसकी उत्पत्ति भारत वासियों के आविष्कार की देन है। इसे विकसित और समृध्द करने के लिए भारतवासियों ने बहुत परिश्रम किये। श्रृष्टि के निर्माता ब्रह्मा के नाम पर इसे ब्राह्मी लिपि नाम दिया गया।

विभिन्न देशों की वर्णमाला का अध्ययन करने पर ज्ञात होता है कि केवल ब्राह्मी लिपी ही पूर्णरुप से वैज्ञानिक लिपि है। इसे समृध्द बनाने में भारतीयों की प्रतिभा झलकती है। एक आदर्श लिपि में जो गुण होने चाहिए वे सभी गुण इसमें हैं इसलिए यह सर्वोत्कृष्ट लिपि है। इसमें स्वर और व्यंजन पूरे हैं। स्वरों में ऱ्हस्व-दीर्घ के लिए तथा अनुस्वार और विसर्ग के लिए उपयुक्त संकेत हैं। व्यंजनों के साथ स्वरों के संयोग को मात्रा के चिन्हों से प्रगट करने की इसमें ऐसी विशेषता है जो अन्य किसी लिपि में नहीं है। साहित्य और सभ्यता के उत्कर्ष से ही ऐसी लिपियों का विकास संभव है। यह लिपि उस काल की सर्वमान्य लिपि होने के कारण ही इसे राज मान्यता मिली तथा जैन और बौध्द धर्म ग्रंथों की रचना भी इसी में की गई और इसे अन्य लिपियों की तुलना में अग्रक्रम पर रखा गया।

जो भी व्यक्ति पुरातात्विक इतिहास में रुचि हिन्दी रखता हो और उसका अध्ययन करना चाहता है उसके लिए ब्राम्ही लिपि की जानकारी आवश्यक है ताकि उसे इससे विकसित अन्य लिपियों और भाषाओं को समझने में सरलता होगी, ऐसा मेरा विश्वास है। यह लिपि सीखने में आसान है और थोड़ा सा मन लगाकर आप भी अल्प समय में इसे सीख सकते हैं।

ब्राह्मी लिपि के अधिकांश लेख चट्टानों पर उत्कीर्ण हैं जिन्हें शिलालेख कहा जाता है। गुफा की दिवारों पर उत्कीर्ण लेख गुहालेख, धातु के प्लेट पर उत्कीर्ण लेख तांब्र पत्र और मृतिकापट्ट पर पाए जाने वाले लेख सिलिंग कहलाते हैं। ये सभी लेख स्थायी एवं दीर्घ कालिक माने गए हैं इसलिए सभी महत्वपूर्ण आदेश शिलालेखों पर उत्कीर्ण किये गए। वर्तमान काल में भी महत्वपूर्ण शिलान्यास शिला पर ही लिखे जाते हैं ताकि वे दीर्घकाल तक सुरक्षित रहें।

प्राचीन भारतीय इतिहास और संस्कृति को समझने के लिए ब्राह्मी का ज्ञान अत्यावश्यक है। जितना अध्ययन हम करेंगे उतनी ही सरलता इसे समझने में होगी। इतिहास की विलुप्त होती कड़ियों को जोड़ना इसके बगैर संभव नहीं है।

5 Brahmi-the Oldest Script of India

Brahmi is the oldest script of India and there is no second thought to it. It is the older form of Devanagari Script. Earlier some European scholars called it pali, Jat etc. but now it is clearly established as Brahmi Script only.

There is very little information over the types of scripts used during the ancient period in India Some information is gathered from the Jaina and Buddhist literature of the 3rd and 4the century B.C. there is a description of 18 scripts in the Jaina religious literature 'Pannavanna Sutra' and 'Samawayang Sutra' which are-

1) Bambhi (Brahmi) 2) Javannaliya 3) Dosapuriya 4) Kharoshti 5) Pukkhasariya 6) Bhogaduya 7) Paharaiya 8) Uyaantarikkhiya 9) Akkharapittiya 10) Tevanaduya 11) Gijahaduya 12) Ankalivi 13) Ganitalivi 14) Gandhavyalivi 15) Adansalivi 16) Mahesari 17) Damili 18) Polindi, of these, Inscriptions of only Brahmi and Kharoshti are found. What could be the reason for this? One reason could be that they being the scientific scripts both of these were widely accepted and used resulting in the dying out of all other scripts and Brahmi becoming the only acceptable script which was also acknowledged by making it the scripts of court language.

The Buddhist literature 'Lalita Vistara' writen in Sanskrit mentions 64 scripts in which Brahmi and kharoshti are respectively placed at no 1 & 2. This is 'Buddha Charita' but the period of its writing is not known. It was translated into chinese in the year 308 A. D.

The Buddhist Encyclopedia in Chinese, Fa-yua chu-lin, was prepared in the year 668 A.D. which contains reference to many ancient scripts and languages, of which Brahmi is described as the main script of the time.

It is very difficult to find out its origin but it is cerainly the discovery of Indians who made great efforts to enrich it and named it Brahmi after the name of lord Brahma the creator of Universe.

If we go through the languages and scripts found the world over we come to know that 'Brahmi Script' is the only scientific script and it proves the talent of Indians. It is the best script as it contains all the characteristics of an ideal script. It has complete range of vowels and consonants. The vowels have perticular signs for normal, stressed and nassal pronounciations. Its uniqueness lies in its ability to represent the combination of vowels with consonants by different Signs of 'Matras' such a development is only possible with the development of literature and civilization of a very high standard. It being the widely accepted script of the period, also received the court sanction. The Jaina & Buddhist religious literature were written in this language only and it was placed on top in comparison to other scripts found during that period.

I believe that one must possess the knowledge of Brahmi if he has the interest in archaeological history and wants to pursue his study of the field so that he easily understands the other scripts and languages which were developed from it. This script is very easy to learn and you will feel the same when you try to learn it.

Most of the Brahmi Inscriptions are on rocks and are called rock inscriptions. Similarly those found in the caves are cave inscriptions, on metal plates are called copper plates and those on terracottas are called silings. All these are permanent and remain same for ages. Therefore all important orders are found in the form of inscriptions. Even in present times also important stone laying ceremonies are performed writing them on stones to make them permanent.

To understand the ancient Indian history and culture, knowledge of Brahmi is must. The more we study it will make it easier to understand as it is not possible to combine the various periods of history into one single unit.

६ वर्णमाला

भारत की प्राचीनतम लिपि, ब्राह्मी लिपि में ६ स्वरों और ३३ व्यंजनों का प्रयोग होता था।

6 ALPHABETS

The oldest Indian script Brahmi contains 6 vowels and 33 consonants.

स्वर (Vowels)

अ (A) 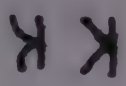

आ (A)

इ (I)

ए (E)

उ (U)

ओ (O)

व्यंजन (Consonants)

क (KA)

ख (KHA)

ग (GA)

घ (GHA)

ङ (NA)

च (CA)

छ (CHA)

ज (JA)

झ (JHA)

ञ (NA)

ट (TA)

ड (DA)

ण (NA)

थ (THA)

ध (DHA)

प (PA)

ब (BA)

म (MA)

र (RA)

व (VA)

ष (SA)

ह (HA)

थ आ (THA)

ढ ए (DHA)

त ओ (TA)

ढ ख (DA)

ण घ (NA)

फ च (PHA)

भ ज (BHA)

य ऋ (YA)

ल (LA)

श (SA)

स (SA)

७ प्राचीन ब्राह्मी लिपि में मात्राओं का प्रयोग

मात्राएँ :- इस प्राचीनतम लिपि में मात्राओं के लिए अलग-अलग चिन्ह बनाए जाते थे।

१) "आ" की मात्रा के लिए (-) यह चिन्ह अक्षर के ऊपरी सिरे पर लगाते थे।

7 Use of Strokes (Matras) in Brahmi

Strokes (Matras) :- In this ancient Indian script different symbols were used for different strokes, called matras.

1) The stroke for sound of a (aa) was (-) horizantal line on the top of the alphabet.

का	खा	गा	धा	चा	छा	जा
(KA)	KHA	GA	DHA	CHA	CHI	JA

झा	टा	ठा	डा	ढा	णा	ता
(JHA)	TA	THA	DA	DHA	NA	TA

था	दा	धा	ना	पा	फा	बा
(THA)	DA	DHA	NA	PA	PHA	BA

भा	मा	या	रा	ला	वा	शा
(BHA)	MA	YA	RA	LA	WA	SHA

षा	सा	हा
(SHA)	SA	HA

२) "इ" के लिए समकोण चिन्ह (⌟) का प्रयोग अक्षर के ऊपर दाहिनी ओर किया जाता था।

2) For the sound of 'e' e.g. (Ki) was (⌟) right angle on the right top of the alphabet.

कि	खि	गि	धि	चि	छि	जि
KI	KHI	GI	DHI	CHI	CHHI	JI

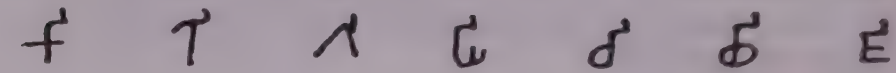

झि	टि	ठि	डि	ढि	णि	ति
JHI	TI	THI	DI	DHI	NI	TI

थि	दि	धि	नि	पि	फि	बि
THI	DI	DHI	NI	PI	PHI	BI

भि	मि	यि	रि	लि	वि	शि
BHI	MI	YI	RI	LI	WI	SHI

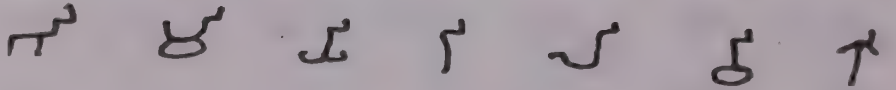

षि	सि	हि
SHI	SI	HI

३) बडी "ई" के लिए समकोण में एक खड़ी लकीर (⊥|) जोडकर अक्षर के ऊपरी सिरे पर दाहिनी ओर किया जाता था।

3) And for the sound of 'ee' e.g. (k̄i) right angle was used on the right top, the only difference was that it had one additional verticle line (⊥|)

की खी गी घी ची छी जी

KEE KHEE GEE GHEE CHEE CHHEE JEE

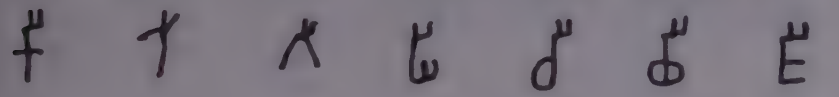

झी टी ठी डी ढी णी ती

JHEE TEE THEE DEE DHEE NEE TEE

थी दी धी नी पी फी बी

THEE DEE DHEE HEE PEE PHEE BEE

भी मी यी री ली वी शी

BHEE MEE YEE REE LEE WEE SHEE

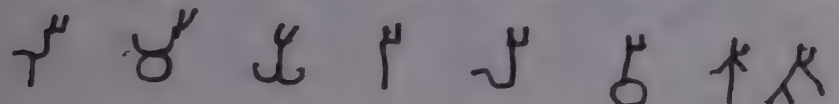

षी सी ही

SHEE SE HEE

४) उ के लिए व्यंजन की खड़ी (।) या आडी (-) लकीर लगाते थे। विशेषकर व्यंजन का निचला हिस्सा गोल या आड़ी लकीर वाला होता था।

4) The stroke for the sound of 'u' was either verticle or horizontal line at the lower end of consonant e.g. (।) or (-)

कु	खु	गु	घु	चु	छु	जु
KU	KHU	GU	GHU	CHU	CHHU	JU

झु	टु	ठु	डु	ढु	णु	तु
JHU	TU	THU	DU	DHU	NU	TU

थु	दु	धु	नु	पु	फु	बु
THU	DU	DHU	NU	PU	PHU	BU

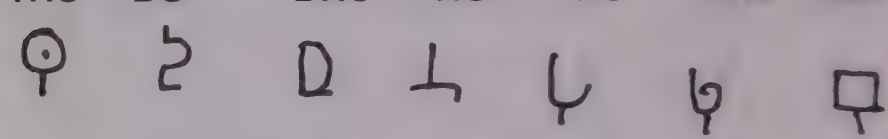

भु	मु	यु	रु	लु	वु	शु
BHU	MU	YU	RU	LU	WU	SHU

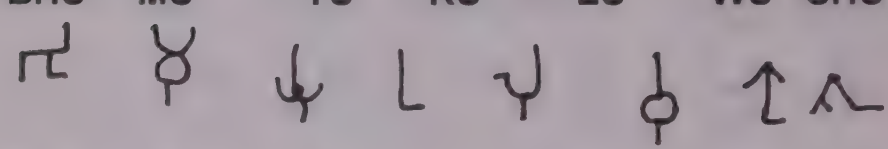

षु	सु	हु
SHU	SU	HU

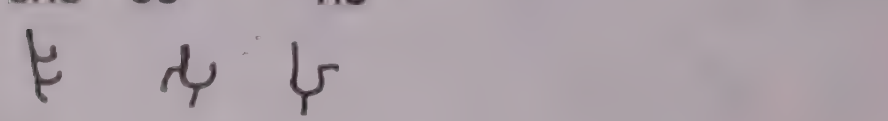

५) "ऊ" के लिए मिलकर दीर्घ ऊ बनाया जाता था। व्यंजन के नीचे दो खडी या आड़ी लकीर भी लगाई जाती थी (II) (=) ऱ्हस्व ड की तरह ही दीर्घ ऊ में भी इनका प्रयोग किया जाता था।

5) And for sound '00' e.g. (ko) (II) or (=) was used just like in the case of 'u'

कू खू गू घू चू छू जू
KOO KHOO GOO GHOO CHOO CHHOO JOO

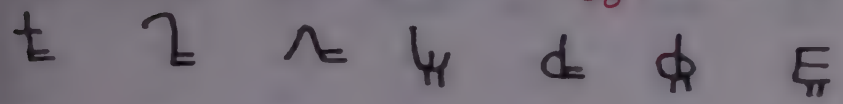

झू टू ठू डू ढू णू तू
JHOO TOO THOO DOO DH00 NOO T00

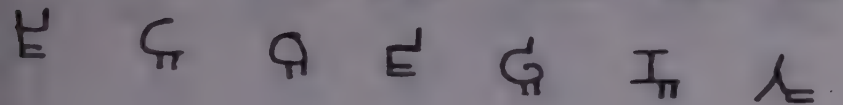

थू दू धू नू पू फू बू
THOO DOO DHOO NOO POO PHOO BOO

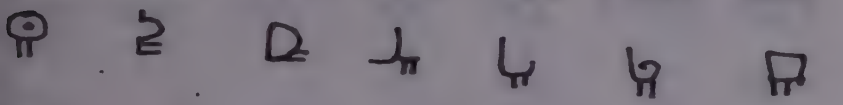

भू मू यू रु लू वू शू
BHOO M00 YOO ROO LOO WOO SHOO

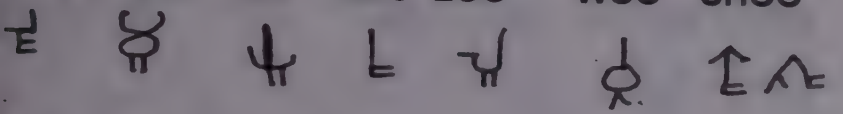

षू सू हू
SHOO SOO HOO

६) "ए" स्वर को स्वर में मिलाकर बनाया जाता था। उदा. अ+इ=ए इसके प्रयोग के लिए मात्रा व्यंजन के ऊपर या कभी-कभी मध्य में बाँई ओर आड़ी लकीर लगाई जाती थी। उदा. (-)

6) The sound of 'A' is created by combining the vowels And the stork used for it was placed either on top or in the centre on the left side e.g. (-)

के	खे	गे	घे	चे	छे	जे
KE	KHE	GE	GHE	CHE	CHHE	JE

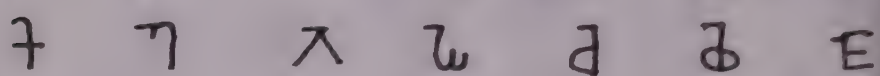

झे	टे	ठे	डे	ढे	णे	ते
JHE	TE	THE	DE	DHE	NE	TE

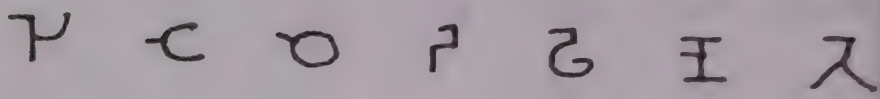

थे	दे	धे	ने	पे	फे	बे
THE	DE	DHE	NE	PE	PHE	BE

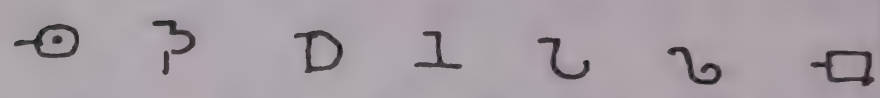

भे	मे	ये	रे	ले	वे	शे
BHE	ME	YE	RE	LE	WE	SHE

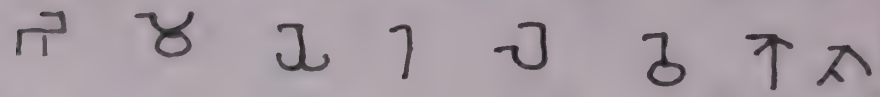

षे	से	हे
SHE	SE	HE

७) "ऐ" को स्वर में स्वर मिलाकर बनाया जाता था। उदा. आ+ई=ऐ इसके प्रयोग के लिए मात्रा बायें सिरे पर या मध्य में आड़ी दो लकीर के ऊपर लगाई जाती थी। उदा. (=)

7) For the sound of 'Ai' the strok (=) was used on the left top corner or in the middle on left side.

कै खै गै घै चै छै जै
KAI KHAI GAI GHAI CHAI CHHAI JAI

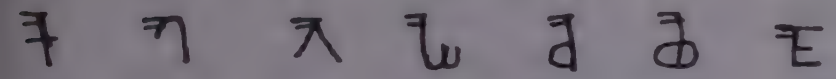

झै टै ठै डै ढै णै तै
JHAI TAI THAI DAI DHAI NAI TAI

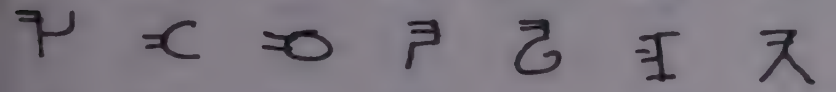

थै दै धै नै पै फै बै
THAI DAI DHAI NAI PAI PHAI BAI

भै मै यै रै लै वै शै
BHAI MAI YAI RAI LAI WAI SHAI

षै सै है
SHAI SAI HAI

८) "आ" में संयुक्त रुप के लिए मात्रा ऊपरी सिरे पर बायें और दाहिने भाग में आड़ी लकीर के रुप में लगाई जाती थी। उदा. (-) आ+ए=ओ

8) For the sound of 'O' the strok (-) was placed on top in the centre.

को	खो	गो	घो	चो	छो	जो
KO	KHO	GO	GHO	CHO	CHHO	JO

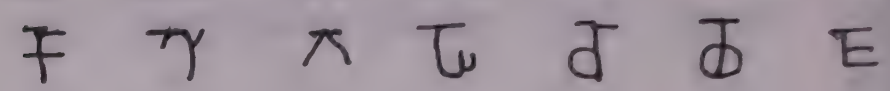

झो	टो	ठो	डो	ढो	णो	तो
JHO	TO	ṬHO	DO	DHO	NO	TO

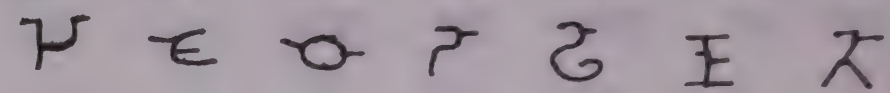

थो	दो	धो	नो	पो	फो	बो
THO	DO	DHO	NO	PO	PHO	BO

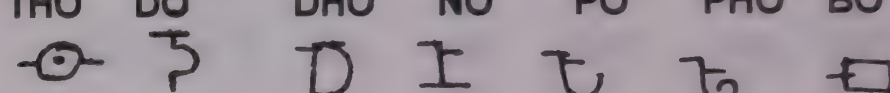

भो	मो	यो	रो	लो	वो	शो
BHO	MO	YO	RO	LO	WO	SHO

षो	सो	हो
SHO	SO	HO

९) "औ" के लिए एक (-) या दो (=) आड़ी लकीर का प्रयोग होता था।

१०) अनुस्वार : सामान्यता ब्राम्ही लिपि में अनुस्वार के लिए अक्षर के वाहिनी ओर बिंदु लगाते थे। अक्सर इसे अक्षर के ऊपरी भाग पर ही लगाया जाता था। किन्तु कभी-कभी अपवाद स्वरूप यह बिंदु बीच में भी आया है।

9) And for the sound of au or ou (-) (=) stroke was used.

10) For nassal sound in Brahmi ( ) dot was used on the right top side of the alphabet but in some cases it was placed in centre also.

कं	खं	गं	घं	चं	छं	जं
KAI	KHAI	GAI	GHAI	CHAI	CHHAI	JAI

झं	टं	ठं	डं	ढं	णं	तं
JHAI	TAI	THAI	DAI	DHAI	NAI	TAI

थं	दं	धं	नं	पं	फं	बं
THAI	DAI	DHAI	NAI	PAI	PHAI	BAI

भं	मं	यं	रं	लं	वं	शं
BHAI	MAI	YAI	RAI	LAI	WAI	SHAI

षं	सं	हं
SHAI	SAI	HAI

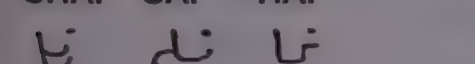

८ ब्राह्मी लिपि में संयुक्त अक्षर (Conjunction)

प्राचीन भारत की इस लिपि में संयुक्त अक्षर का प्रयोग बहुत कम देखने को मिलता है। इन अक्षरों में पहले वाले को ऊपर और बाद वाले को नीचे जोड़ा जाता है।

The use of conjunction is very rare in Brahmi and wherever used, the alphabet appearing first was placed on top and the following one was jointed at the bottom of the previous alphabet.

क्य KYA	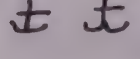	न्य NYA		स्ट STA	
क्र KRA		प्र PRA		स्त STA	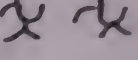
ख्य KHYA	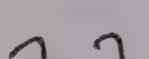	त्र TPAT	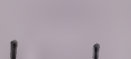	स्प SPA	
ग्य GYA		ब्रा BRA		स्म SMA	
च्य CYA		भ्य BHY		स्य SYA	
त्य TYA		म्य MYA		स्व SWA	
त्र NA		म्ह MHA		ह्य NYA	

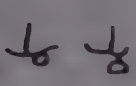

त्व TWA	व्य WYA	ह्वे HWE
द्र DPA	य्व YWA	ह्य HYA
द्ध DHA	व्र WRA	र्स SRA
ध्य DHYA	ख्व KHOW	ह्यी HBHE

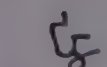

९ बारहखडी (ब्राह्मी)

क	का	कि	की	कु	कू	के	कै	को	कं
KA	KA	KI	KEE	KU	KOO	KE	KAI	KO	KAM

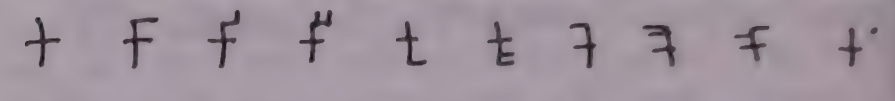

ख	खा	खि	खी	खु	खू	खे	खै	खो	खं
KHA	KHA	KHI	KHEE	KHU	KHOO	KHE	KHAI	KHO	KHAM

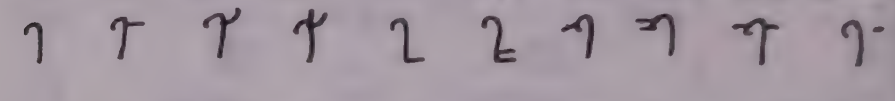

ग	गा	गि	गी	गु	गू	गे	गै	गो	गं
GA	GA	GI	GEE	GU	GOO	GE	GAI	GO	GAM

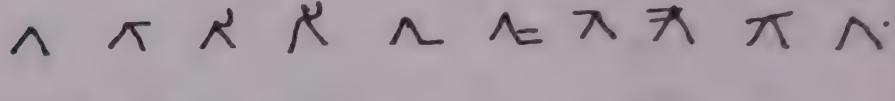

घ	घा	घि	घी	घु	घू	घे	घै	घो	घं
GHA	GHA	GHI	GHEE	GHU	GHOO	GHE	GHAI	GHO	GHAM

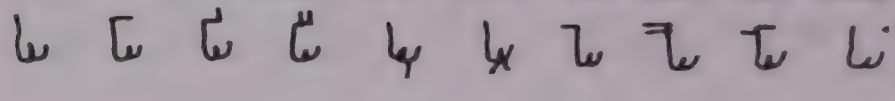

च	चा	चि	ची	चु	चू	चे	चै	चो	चं
CHA	CHA	CHI	CHEE	CHU	CHOO	CHE	CHAI	CHO	CHAM

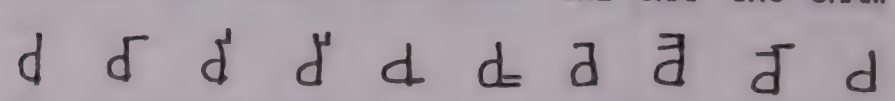

छ	छा	छि	छी	छु	छू	छे	छै	छो	छं
CHHA	CHHA	CHHI	CHEE	CHHU	CHOO	CHHE	CHHAI	CHHO	CHHAM

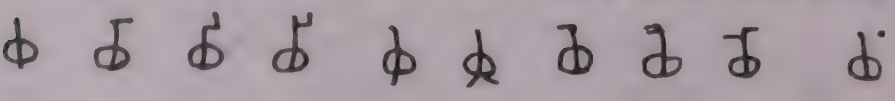

ज	जा	जि	जी	जु	जू	जे	जै	जो	जं
JA	JA	JI	JEE	JU	JOO	JE	JAI	JO	JHAM

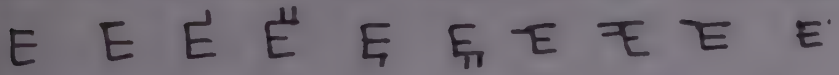

झ	झा	झि	झी	झु	झू	झे	झै	झो	झं
JHA	JHA	JHI	JHEE	JHU	JHOO	JHE	JHAI	JHO	JHAM

ट	टा	टि	टी	टु	टू	टे	टै	टो	टं
TA	TA	TI	TEE	TO	TOO	TE	TAI	TO	TAM

ठ	ठा	ठि	ठी	ठु	ठू	ठे	ठै	ठो	ठं
THA	THA	THI	THEE	THU	THOO	THE	THAI	THO	THAM

ड	डा	डि	डी	डु	डू	डे	डै	डो	डं
DA	DA	DI	DEE	DU	DOO	DE	DAI	DO	DAM

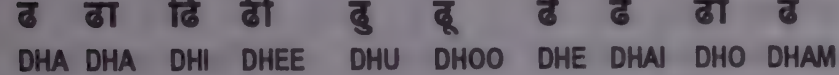

ढ	ढा	ढि	ढी	ढु	ढू	ढे	ढै	ढो	ढं
DHA	DHA	DHI	DHEE	DHU	DHOO	DHE	DHAI	DHO	DHAM

ण	णा	णि	णी	णु	णू	णे	णै	णो	णं
NA	NA	NI	NEE	NU	NOO	NE	NAI	NO	NAM

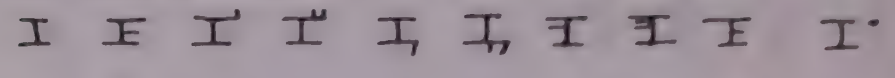

त	ता	ति	ती	तु	तू	ते	तै	तो	तं
TA	TA	TI	TEE	TU	TOO	TE	TAI	TO	TAM

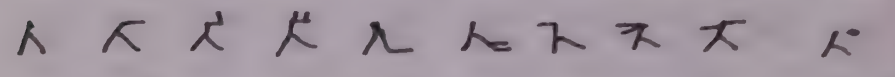

थ	था	थि	थी	थु	थू	थे	थै	थो	थं
THA	THA	THI	THEE	THU	THOO	THE	THAI	THO	THAM

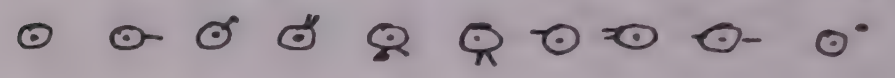

द	दा	दि	दी	दु	दू	दे	दै	दो	दं
DA	DA	DI	DEE	DU	DOO	DE	DAI	DO	DAM

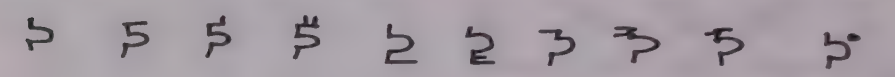

न	ना	नि	नी	नु	नू	ने	नै	नो	नं
NA	NA	NI	NEE	NU	NOO	NE	NAI	NO	NAM

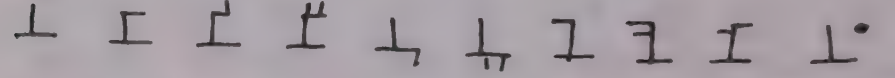

प	पा	पि	पी	पु	पू	पे	पै	पो	पं
PA	PA	PI	PEE	PU	POO	PE	PAI	PO	PAM

फ	फा	फि	फी	फु	फू	फे	फै	फो	फं
PHA	PHA	PHI	PHEE	PHU	PHOO	PHE	PHAI	PHO	PHAM

ब	बा	बि	बी	बु	बू	बे	बै	बो	बं
BA	BA	BI	BEE	BU	BOO	BE	BAI	BO	BAM

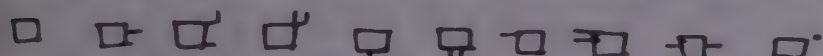

भ	भा	भि	भी	भु	भू	भे	भै	भो	भं
BHA	BHA	BHI	BHEE	BHU	BHOO	BHE	BHAI	BHO	BHAM

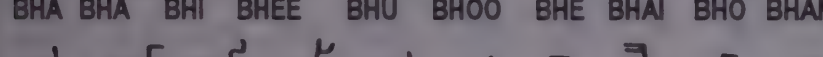

म	मा	मि	मी	मु	मू	मे	मै	मो	मं
MA	MA	MI	MEE	MU	MOO	ME	MAI	MO	MAM

य	या	यि	यी	यु	यू	ये	यै	यो	यं
YA	YA	YI	YEE	YU	YOO	YE	YAI	YO	YAM

र	रा	रि	री	रु	रू	रे	रै	रो	रं
RA	RA	RI	REE	RU	ROO	RE	RAI	RO	RAM

ल	ला	लि	ली	लु	लू	ले	लै	लो	लं
LA	LA	LI	LEE	LU	LOO	LE	LAI	LO	LAM

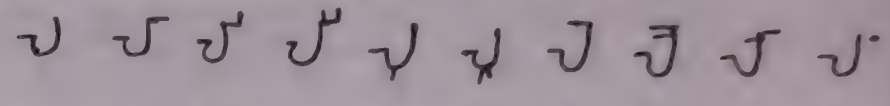

व	वा	वि	वी	वु	वू	वे	वै	वो	वं
WA	WA	WI	WEE	WU	WOO	WE	WAI	WO	WAM

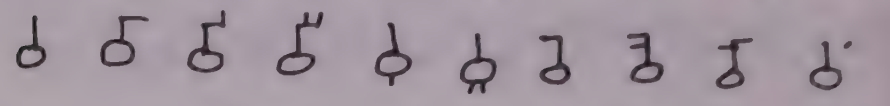

श	शा	शि	शी	शु	शू	शे	शै	शो	शं
SHA	SHA	SHI	SHEE	SHU	SHOO	SHE	SHAI	SHO	SHAM

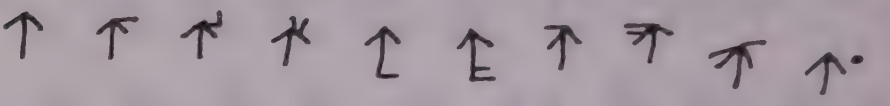

ष	षा	षि	षी	षु	षू	षे	षै	षो	षं
SHA	SHA	SHI	SHEE	SHU	SHOO	SHE	SHAI	SHO	SHAM

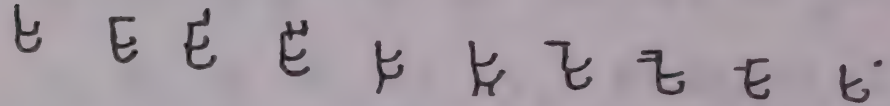

स	सा	सि	सी	सु	सू	से	सै	सो	सं
SA	SA	SI	SEE	SU	SOO	SE	SAI	SO	SAM

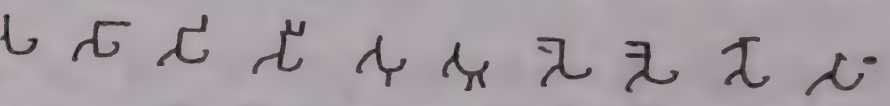

ह	हा	हि	ही	हु	हू	हे	है	हो	हं
HA	HA	HI	HEE	HU	HOO	HE	HAI	HO	HAM

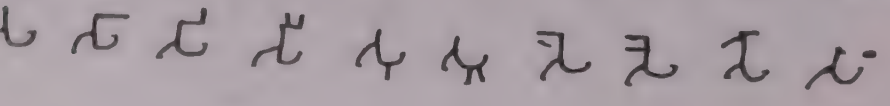

10 Brhmi Lipi

Maurya, Post-Maurya, Kushana, Satavahana-Kshatrapas & Gupta Chart

		Maurya	Post - Maurya	Kushana	Satavahana-Kshatrapas	Gupta
अ	A					
आ	A	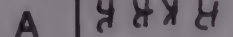				
इ	I					
उ	U					
ए	E					
ओ	O					
क	KA					
ख	KHA					
ग	GA					

घ	GHA	Go-	Go	Go	Go-	
च	CHA	Gho		Chi		
छ	CHHA	chha-		chi-		
ज	JA	Ja-, Jo	Je-Je			
झ	NA					
ञ	TA	tha	tho.			
ट	THA	Te-; Ti				
ठ	DA					
ड	DHA					
ढ	DHA					
ण	NA			ni		
त	TA	Ta-; T.		tu-; to		

थ	THA
द	DA
ध	DHA
न	NA
प	PA
फ	PHA
ब	BA
भ	BHA
म	MA
य	YA
र	RA
ल	LA

व	VA					
श	SA					
ष	SA					
स	SA					
ह	HA					
क्ष	KSA					
त्र	TRA					
ज्ञ	JNA					
प्र	PRA					
RTVA	RTVA					
ज्य	JAY					
ई	NVA					
द्र	NDRA					

क्र	KRA					
ग्र	GRA					
ब्र	BRA					
गृ	GRI					
वृ	VRI					
द्ध	DDHA					
द्धय	DDHEYA					
ण्य	NYA					
न्न	NNA					
ह्म	HMA					
श्र	SRA					
ष्क	SKA					
स्य	SYA					

स्त	STA	[illegible]				
त्स	TSA			[illegible]		
स्व	SVA	[illegible]	[illegible]		[illegible]	[illegible]
भ्य	BHYA				[illegible]	
र्ध	XDHA		[illegible]		[illegible]	
द्व	DVA	[illegible]			[illegible]	[illegible]
श्म	SME				[illegible]	
त्म	TME				[illegible]	
द्र	DRA				[illegible]	[illegible]
ष्ट	STA			[illegible]	[illegible]	

11 Gupta Gold coin - Legunt

Obverse Type	Samudragupta	Chandragupta II	Kumaragupta I	Skandagupta	Others
Standard type	पराक्रमः Parakramah	Paramabhagavata परमभगवत			
Archer type	अप्रतिरथः Parakramah पराक्रमः Parakramah	श्री विक्रम Sri Vikramah	श्री महेन्द्र Sri Mahendrah	श्री स्कंद गुप्त Sri Skandagupta	श्री महेन्द्र Kramadityah क्रमादित्य [Kumaragupta II, Gatotkachagupta]
King & Queen type	Lichchhavayah लिच्छवयः	Sri Vikramah श्री विक्रम :	Sri Kumaragupta श्री कुमारगुप्त :	Sri Skandagupta श्री स्कंद गुप्त	

Battle Axe type	Kritantaparasuh कृतान्तपरशः				
Kacha type	Sarvarajo-chchhetta सर्वराजीच्छत्ता				
Tiger-Slayer type	Raja Samudraguptah राज समुद्रगुप्त Vyaghraparakrama		Kumaraguptodiraja		
Lyrist type	Samudraguptah		Kumaragupta		

Chakravikrama type		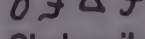 Chakravikrama कृतान्तपरशः			
Elephant rider type			Sri Mahendragaja श्री महेन्द्रराजा		
Elephant rider & Lion slayer type			Sinhanihanta Mahendragaja		
Asvamedha type Couch type	Asvamedha अश्वमेघ Parakramah पराक्रम		Sri Asvamedha mahendrah श्री अश्वमेघ महेन्द्र		

Couch type		Vikramah श्री विक्रम : 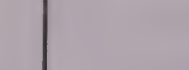 Vikramadityah श्री विक्रमादित्य :			Sri Narendraditya श्री नरेद्रदित्य :
Chhatra type		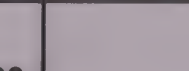 Vikramadityah	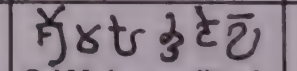 Sri Mahenraditya श्री महेन्द्रदित्या :	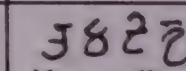 Kramadityah क्रमादित्य :	
Lion- slayer type		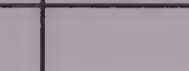 Sinhavikramah श्री सिंहविक्रम : Simhachandra	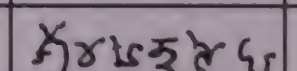 Sri Mahendrasinha 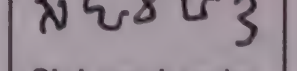 Sinhamahendra		

Rhinoceros type			Sri Mahenra-khadga श्री महेन्दखड्ग		
Horseman type		Ajitavikramah अजितविक्रम :	Ajitamahendrah अजितमहेन्द्र	Kramadityah क्रमादित्य :	Sri Prakashaditya श्री प्रकाशदित्य
Swordsman type			Kumaragupta कुमारगुप्त		
Apratigha type			Apratighah		
Kartikeya type			Mahendrakumara महेन्द्रकुमार		

Pratapa type			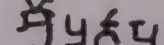 Sri Pratapa श्री प्रताप		
Siva on Bull type Sasanka					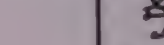 Sri Sasanka श्री शंशाक
Bull type [Virasena ?]					Kramadityah क्रमादित्य

12 Western Kshatrapas Coin Language (Brahmi Lipi)

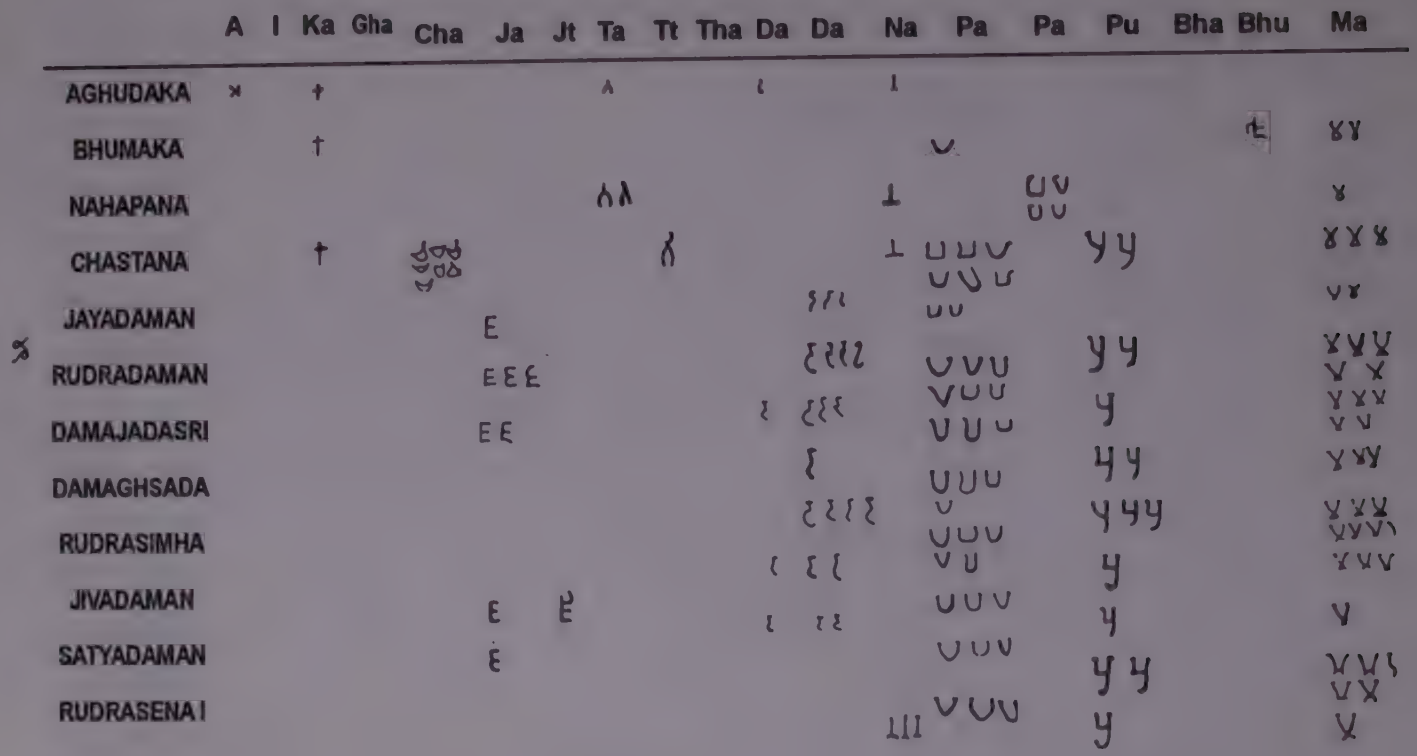

	A	I	Ka	Gha	Cha	Ja	Jt	Ta	Tt	Tha	Da	Da	Na	Pa	Pa	Pu	Bha	Bhu	Ma
PRITHVISENA																			
DAMASENA																			
SAMGHADAMAN																			
DAMAJADASRI II																			
VIRADAMAN																			
YASODAMAN I																			
VIJAYASENA																			
ISVARADATTA																			
DAMAJADASRI III																			
RUDRASENA II																			
VISVASIMHA																			
BHARTRDAMAN																			
VISVASIMHA																			

	A	I	Ka	Gha	Cha	Ja	Jt	Ta	Tt	Tha	Da	Da	Na	Pa	Pa	Pu	Bha	Bhu	Ma
RUDRASIMHA II																			
YASODAMAN II																			
RUDRASENA III																			
SIMHASENA																			
RUDRASENA IV																			
RUDRASIMHA III																			

Mi Ma Ya Ra Ra Ru Va Vi Vt Sa So Sa St Ha Ksa Ghsa Jna
AGHUDAKA
BHUMAKA
NAHAPANA
CHASTANA
JAYADAMAN
RUDRADAMAN
DAMAJADASRI
DAMAGHSADA
RUDRASIMHA
JIVADAMAN
SATYADAMAN
RUDRASENA I
PRITHIVISENA

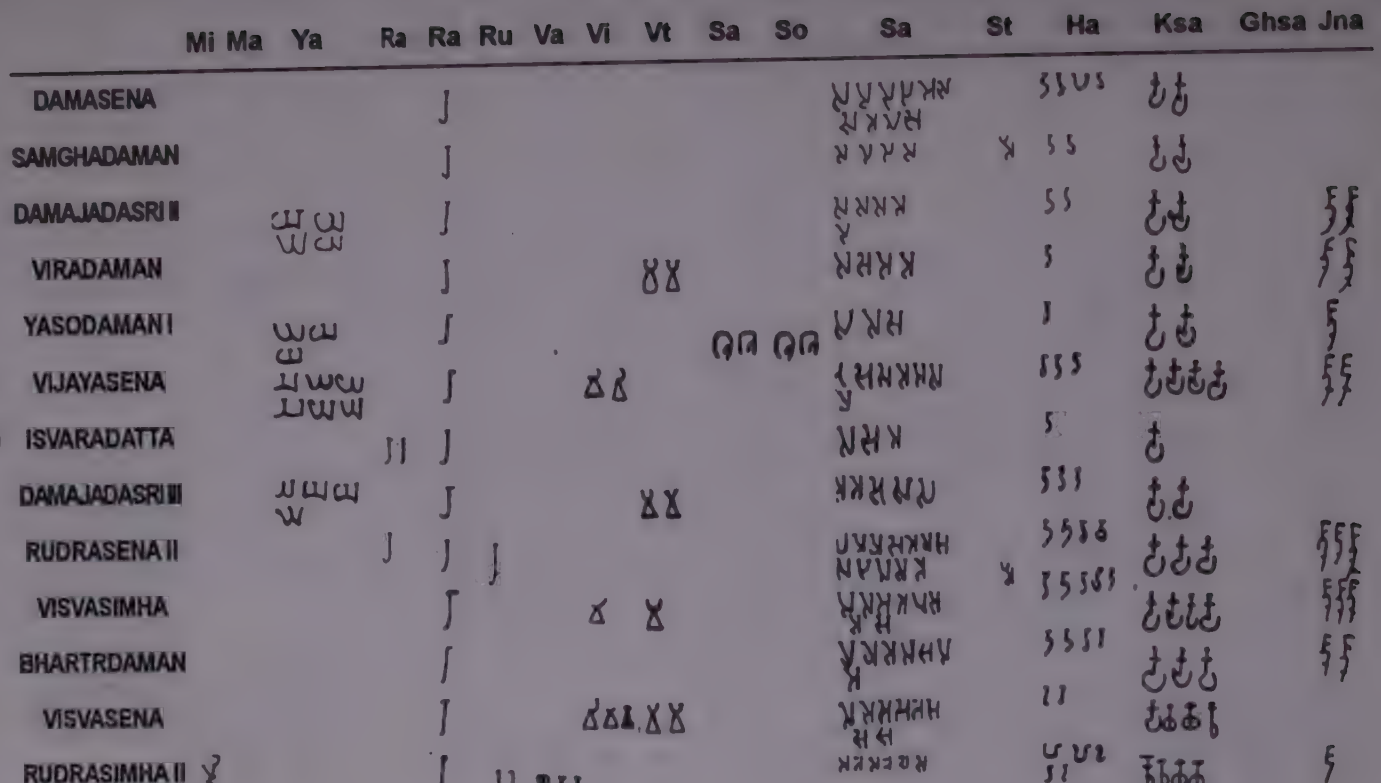

Mi Ma Ya Ra Ra Ru Va Vi Vt Sa So Sa St Ha Ksa Ghsa Jna
DAMASENA
SAMGHADAMAN
DAMAJADASRI II
VIRADAMAN
YASODAMAN I
VIJAYASENA
ISVARADATTA
DAMAJADASRI III
RUDRASENA II
VISVASIMHA
BHARTRDAMAN
VISVASENA
RUDRASIMHA II

	Mi	Ma	Ya	Ra	Ra	Ru	Va	Vi	Vt	Sa	So	Sa	St	Ha	Ksa	Ghsa	Jna
YASODAMAN II																	
RUDRASENA III																	
SIMHASENA																	
RUDRASENA IV																	
RUDRASIMHA III																	

	Jna	Tr	Tta	Tya	Tra	Dra	Dvi	Pr	Pra	Mna	Rtr	Rse	Sri	Sva	Sta	Sya	Sra	Sva	Sva
AGHUDAKA																			
BHUMAKA																			
NAHAPANA																			
CHASTANA	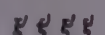																		
JAYADAMAN																			
RUDRADAMAN																			
DAMAJADASRI																			
DAMAGHSADA																			
RUDRASIMHA																			
JIVADAMAN																			
SATYADAMAN																			
RUDRASENA I																			
PRTHIVISENA																			

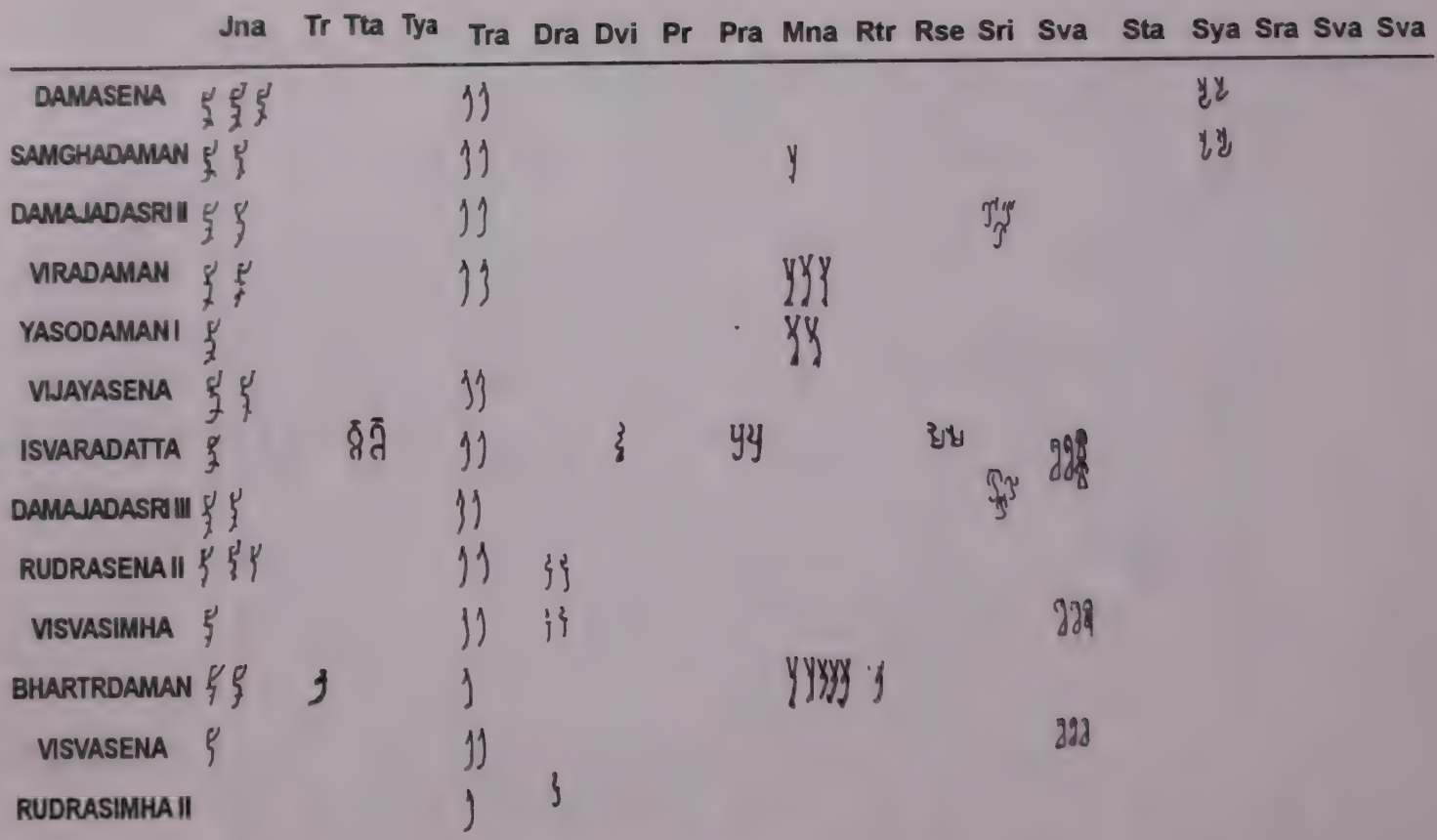

Jna
Tr
Tta
Tya
Tra
Dra
Dvi
Pr
Pra
Mna
Rtr
Rse
Sri
Sva
Sta
Sya
Sra
Sva
Sva
DAMASENA
SAMGHADAMAN
DAMAJADASRI II
VIRADAMAN
YASODAMAN I
VIJAYASENA
ISVARADATTA
DAMAJADASRI III
RUDRASENA II
VISVASIMHA
BHARTRDAMAN
VISVASENA
RUDRASIMHA II

	Jna	Tr	Tta	Tya	Tra	Dra	Dvi	Pr	Pra	Mna	Rtr	Rse	Sri	Sva	Sta	Sya	Sra	Sva	Sva
YASODAMAN II																			
RUDRASENA III																			
SIMHASENA																			
RUDRASENA IV																			
RUDRASIMHA III																			

13 Name of Kshatrapa Kings

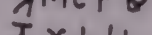	Abhirak	अभिरक
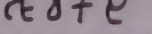	Bhumaka	भूमक
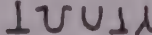	Nahapana	नहपान
	Chastana	चष्टन
	Jayadaman	जयदमन
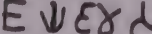	Rudradaman	रुद्रदमन
	Damajadasri-I	दामजदश्री (प्रथम)
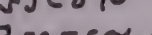	Damaghsada	दामघसद
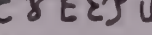	Rudrasimha-I	रुद्रसिंह (प्रथम)
	Jivadaman	जीवदमन
	Satyadaman	सत्यदमन
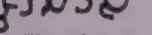	Rudrasena-I	रुद्रसेन (प्रथम)
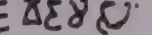	Pritivisena-I	पृथ्वीसेन (प्रथम)
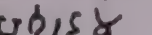	Damasena	दामसेन
	Sanghadaman	संघदामन
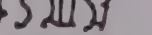	Damajadasri - II	दामजदश्री (द्वितीय)
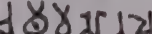	Viradaman	वीरदामन
	Yasodaman - I	यशोदमन (प्रथम)
	Vijayasena	विजयसेना
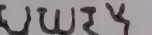	Isvaradatta	ईश्वरदत्त
	Damajadasri - III	दामजदश्री (तृतीय)
	Rudrasena - II	रुद्रसेन (द्वितीय)
	Visvasimha	विश्वसिंम्हा
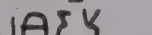	Bhartridaman	भ्रतृदमन
	Visvasena	विश्वसेन
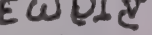	Rudresena-II	रुद्रसेन (द्वितीय)

	Yasodaman - II	यशोदामन (द्वितीय)
	Rudresena - III	रुद्रसेन (तृतीय)
	Simhasena	सिंम्हासेन
	Rudrasena IV	रुद्रसेन (चतुर्थ)
	Rudrasimha -III	रुद्रसिंह (तृतिय)

Titles Common Words

	Rajno	राज्ञो
	Rajna	राज्ञो
	Kshatrapasa	क्षात्रप
	Mahakshatrapasa	महाक्षात्रप
	Svami	स्वामी
	Putrasa	पुत्रस
	Varshe	वर्ष

१४ प्राचीन भारत की अंक प्रणाली

प्राचीन भारत के सिक्कों तथा अनेक शिलालेखों में अंकों का भी अस्तित्व दिखाई पड़ता है। मनुष्य बहुत ही बुध्दिमान प्राणी है। मानव ने ही अंकों की कल्पना की और उसे अस्तित्व में लाया। प्राचीन काल में अंक प्रणाली प्राथमिक अवस्था में थी। लंबे समय तक अंकों के लिए अक्षरों का ही प्रयोग होता रहा। १ से ८ तक नौ चिन्ह या अक्षर दर्शाये गए हैं १० से ९० तक के लिए ९ और सौ हजार या दस हजार के लिए भिन्न-भिन्न प्रकार के चिन्हों का प्रयोग किया जाता था। इन सभी के अध्ययन से ज्ञात होता है कि अंक प्रणाली के माध्यम से १ लाख तक की संख्या के लिए ही चिन्ह थे। प्राचीन भारत और विश्व के अन्य भागों में अंक प्रणाली पूरी तरह विकसित नहीं हुई थी और गणना प्रक्रिया जटिल थी। भारत वासियों नें ही अंक प्रणाली के सबसे महत्वपूर्ण अंक शून्य की खोज की जिससे अंक प्रणाली और गणना के क्षेत्र में क्रांतिकारी परिवर्तन आये। सारी दुनिया ने इसे मान्यता दी जिसके पश्चात गणित का तीव्र विकास हुआ।

प्राचीन काल में कहीं-कहीं सिक्कों तथा शिलालेखों में लिपि के साथ अंकों का भी प्रयोग हुआ है, विशेषकर शिलालेखों तथा सिक्कों पर चार प्रकार के अंक मिलते है ४,६,५० और २०० कुछ अंक ब्राम्ही लिपि के समान नजर आते है। कुछ शिलालेखों में ६,५० एवं २०० ये अंक नजर आते है। १.६=५०=३.२००= ब्राम्ही लिपि के सु के समान है प्राचीन भारत के इतिहास का अध्ययन किया जाए तो सातवाहन साम्राज्ञी नायानिका के नानाघाट लेख में सबसे ज्यादा अंक नजर आते है। प्राचीन विदर्भ के देवटक (तहसील-नागभीड, जिला चंद्रपुर) में केवल १० अंको के प्रयोग का ही उल्लेख मिलता है। इस प्रकार प्राचीन भारत में अलग-अलग रुप प्रयोग में लाए गए हैं। इनकी सविस्तार जानकारी पुस्तक के अंत में चार्ट में दी गई है जिसमें राजवशों के नाम व काल के साथ जानकारी उपलब्ध है। ताकि अध्ययनकर्ताओं को अध्ययन में आसानी हो सके।

14 Numeral System in Ancient India

The use of numbers is traced back to the coins and inscriptions of ancient India. Man is an intelligent animal. His imagination and hunger for knowledge led to the development of numeral system. During the ancient period it was in primary stage of development and for long, alphabets were used to denote numbers. For digits 1 to 9, nine symbols or alphabets were used and for 10 to 90,000, different symbols for tens, hundreds, Thousand and ten thousand were used. The study shows that only numbers upto One hundred thousand could be shown by them. The numeral system was not fully developed in ancient India and rest of the world The calculation process was complex. The credit for discovery of 'O', (zero) the most important number of the numeral system goes to the Indians only and this discovery revolutionized the numeral system and the field of calculation. The whole world accepted it leading to rapid progress in the field of mathematices.

During the ancient period, numbers with scripts also 4 types of numbers are mainly found on coins and inscriptions. They are 4, 6, 50 and 200 some numbers look alike 'ka' of Brahmi Script. On some other inscriptions 6, 50 and 200 are visible. 1.6=62 50 = x3.200 = xH look like 'SU' of Brahmi Script The study of ancient Indian history reveals that the maximum use of numbers was found in the nanaghat inscriptions of the Satavahana empress, Nayanika. In the inscriptions found at Devtak, in Nagbhir tahsil of Chandrapur district, the use of only ten numbers occure. This shows that different forms of numerals were used during different dynasties, rule. The details of all those are given in the end in the form of chart along with the period of its use and the name of the ruling dynasly to help the researchers and students who will surely find it easy to understand.

15 Ancient Numerals Chart

1	𑁒	10	𑁛	100	𑁤
2	𑁓	20	𑁜	200	𑁤𑁒
3	𑁔	30	𑁝	300	𑁤𑁓
4	𑁕	40	𑁞		
5	𑁖	50	𑁟		
6	𑁗	60	𑁠		
7	𑁘	70	𑁡		
8	𑁙	80	𑁢		
9	𑁚	90	𑁣		

16 Hieroglyphic and semitic Numerals in Ancient India

	Hieroglyphic	Phoenician	Hieretic	Vemotic	Inscriptions of Ashoka	Inscriptions of Nanethat	Inscriptions of Kushana	Inscriptions of Kshatrapas & A.P.
1								
2								
3								
4								
5								
6								
7								
8								
9								
10								
11								
19								

20
30
40
50
60
70
80
90
100
200
300
400
500
700

1000
2000
3000
4000

Ancient Indian Numerals
(1 to 9)

	Inscriptions of Ashoka 3rd Cen. B.C.	Inscriptions of Nanethat 2nd Cen. B.C.	Inscriptions of Kushana 1st & 2nd Cen. A.D.	Inscriptions of Nasik Caves Kshatrapas & Satavahanas 2nd Cen. A.D	Inscriptions of Kshaprapas Coins 4th Cen. A.D.	Inscriptions of Jaggyapet 4th Cen. A.D.
1						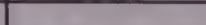
2						
3						
4						
5						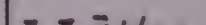
6						
7						
8						
9						

Ancient Numerals
(1 to 9)

	Inscriptions of Gupta & other Contemporary rulers 4 to 6 Cen. A.D.	Copper Plate of Vakataka 4 to 5 Cen. A.D.	Danpatra of Pallavas and shakyayan rular 5 to 6 Cen. A.D.	Danpatra of Vallabhi 6 to 8 cen. A.D.	Inscriptions of Nepal 8 to 9 Cen. A.D.
1					
2					
3					
4					
5	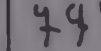				
6	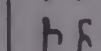				
7	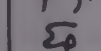				
8	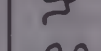				
9	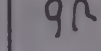				

Ancient Numerals
(1 to 9)

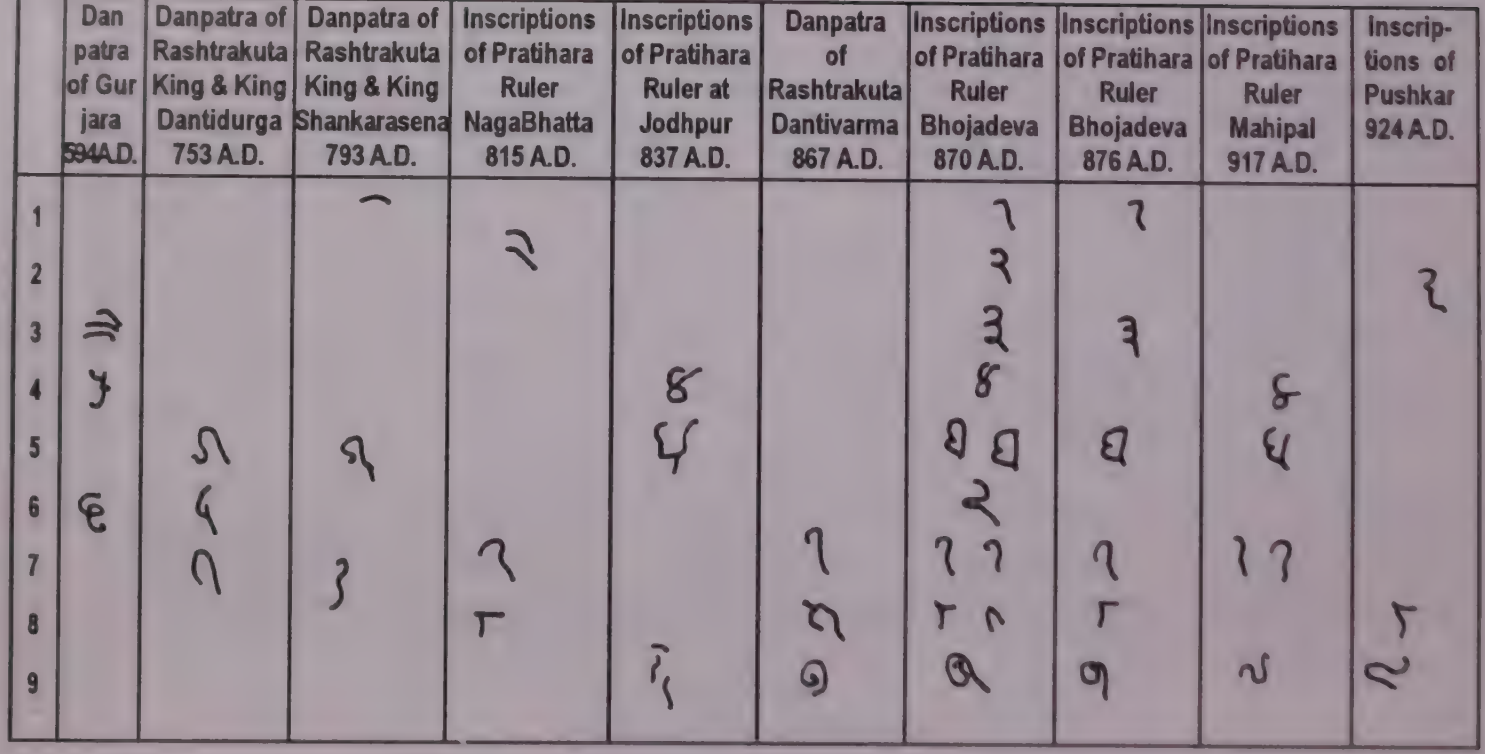

	Dan patra of Gur jara 594A.D.	Danpatra of Rashtrakuta King & King Dantidurga 753 A.D.	Danpatra of Rashtrakuta King & King Shankarasena 793 A.D.	Inscriptions of Pratihara Ruler NagaBhatta 815 A.D.	Inscriptions of Pratihara Ruler at Jodhpur 837 A.D.	Danpatra of Rashtrakuta Dantivarma 867 A.D.	Inscriptions of Pratihara Ruler Bhojadeva 870 A.D.	Inscriptions of Pratihara Ruler Bhojadeva 876 A.D.	Inscriptions of Pratihara Ruler Mahipal 917 A.D.	Inscrip-tions of Pushkar 924 A.D.
1										
2										
3										
4										
5										
6										
7										
8										
9										

Ancient Numeral
(1 to 9)

	Dan patra of Ganga Rulers at Kalinga 7 & 8 Cen. A.D.	Inscriptions and Danpatra of Partihara 9 & 10 Cen. A.D.	Different Inscriptions Danpatra 5 to 8 Cen. A.D.	Manul Scripts		
				Inscriptions Books found at Babur Sahab 6 Cen. A.D.	Buddhist Literature found in Nepal	Inscriptions of Jain Literature
1						
2						
3						
4						
5						
6						
7						
8						
9						

Ancient Numerals
(10 to 90)

	Inscriptions of Ashoka 3rd Cen. B.C.	Inscriptions of Ashoka, Mahapahra Devatak, Chandrapur 3rd Cen. B.C.	Naneghat Inscriptions 2nd Cen. B.C.	Inscriptions of Mathura Etc. of the period of Kushan Ruler 1 to 2 Cen. A. D.	Nashik Cave Inscriptions Kshatrapas & Satavahanas 2nd Cen. A. D.	Coin of Kshatrapas 2nd to 4th Cen. A.D.	Inscription of Jagyyapet & Danpatra of Pallava Ruler ShivaSkanda Burman 4th Cen. A.D.
10							
20							
30							
40							
50							
60							
70							
80							
90							

Ancient Numeral
(10 to 90)

	Inscriptions of Guptas & their contemporaries pariwrajak kings 4th to 6th Cen. A. D.	Danpatras of Vakatakas 5th Cen. A.D.	Danpatras of Vallalbhi 6th to 8th Cen. A.D.	Danpatras of Shakyayanas 6th Cen. A.D.	Inseriptions of Nepal 8th to 9th Cen. A.D.	Danpatra of Ganga Rulers at kalinga 7th to 8 Cen. A.D.
10	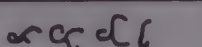					
20			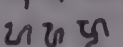			
30	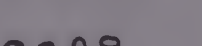		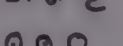			
40	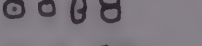		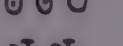			
50						
60			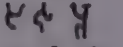			
70			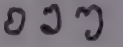			
80						
90						

Ancient Numeral
(10 to 90)

Ancient Numeral
(100 to 900)

	Ashoka Inscriptions 3rd Cen. B.C.	Nanaghat Inscription of 2nd Cen. B.C.	Nashik Inscription 1st & 2nd Cen. A.d.	Coins of Kashatrapas 2nd to 4th Cen. A.D.	Inscriptions of Guptas & their Contemporaries 4th to 6th Cen. A.D.	Danpatras of Vallabhi Kings 6th to 8th Cen. A.D.
100						
100						
200						
200						
300						
400						
500						
700						

Ancient Numeral
(100 to 900)

	Inscriptions of Nepal 8th & 9th Cen. A.D.	Danpatras of Ganga Rulers of Kalinga 7th to 8th Cen. A.D.	Danpatras of Pratiharas 9th & 10th Cen. A.D.	Different Inscriptions of 9th & 10th Cen. A.D.	Manual Scripts	
					Buddhist Texts	Jaina Literature
100						
200						
300						
400						
500						
600						
700						
800						
900			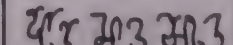			

Ancient Numeral
(1000 to 70000)

	Nanaghat Inscription 2nd Cen. B.C.	Nashik Inscriptions 1st & 2nd Cen. A.D.	Danpatras of Vakatakas 5ths Cen. A.D.	Composite Numerals					
1000	[illegible]	[illegible]	[illegible]	15	[illegible]	129	[illegible]	1001	
2000		[illegible]		28	[illegible]	189	[illegible]	1002	[illegible]
3000		[illegible]		33	[illegible]	301	[illegible]	1101	[illegible]
4000	[illegible]	[illegible]		45	[illegible]	428	[illegible]	1700	[illegible]
6000	[illegible]			52	[illegible]	538	[illegible]	6001	[illegible]
8000		[illegible]	[illegible]	62	[illegible]	676	[illegible]	10001	[illegible]
10000	[illegible]			76	[illegible]	703	[illegible]	11000	[illegible]
20000	[illegible]			81	[illegible]	813	[illegible]	24400	[illegible]
70000		[illegible]		93	[illegible]	655	[illegible]		

Scripts

The Numerals of Kharoshti and other scripts which developed from Brahmi The new form of numerals of Scripts developed from Brahmi Script

Numerals of Scripts Developed From Brahmi

	Inscriptions in Sharda Script 11th & 12th Cen. A.D.	Inscriptions of Danpatra of Bangla Script 11th to 13th Cen. A.D.	11th to 15th Cen. A.D.	15th Cen. A.D.
1	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
2	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
3	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
4	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
5	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
6	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
7	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
8	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
9	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
0	o		o	o

Numerals of Kharoshti Script

Inscriptions of the Shaka Parthitans & Kushana Dynasties rule			Ashokan Inscriptions	
[illegible]	40	/	/	1
[illegible]	50	//	//	2
[illegible]	30	///		3
[illegible]	70	X	///	4
[illegible]	80	IX	/////	5
[illegible]	100	IIX		6
[illegible]	200	IIIX		7
[illegible]	300	XX		8
[illegible]	122	[illegible]		10
[illegible]	274	[illegible]		20

18 Annexure - 1

अ A
आ A
इ I
उ U
ए E
ओ O
क KA
ख KHA
ग GU
घ GHA
च CHA
छ CHHA
ज JA
झ JHA
ञ NA
ट TA
ठ THA
ड DA
ढ DHA

19 PariShist - 2

Inscription of Nasik, Satavahana Ruler Pulamavi 2nd Cen. A.D.

अ	आ	इ	उ	ए	ए	ओ	क	ख	ख	ख	ग	घ	च	छ	ज
A	A	I	U	E	E	O	KA	KHA	KHA	KHA	GA	GHA	CHA	CHHA	JA

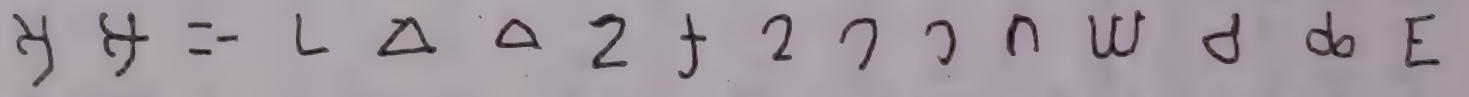

ज	झ	अ	ट	ठ	ड	ढ	ण	त	त	थ	द	ध	ध	न	प	ब
JA	JHA	NA	TA	THA	DA	DHA	NA	TA	TA	THA	DA	DHA	DHA	NA	PA	BA

ः

भ	म	य	य	र	ल	व	स	ह	ळ	मा	वा	गि	डि	रि	यि	सि
BHA	MA	YA	WA	RA	LA	WA	SA	HA	LA	MA	WA	GI	DI	RI	YI	SI

वी	कु	खु	तु	नु	सु	लु	भू	सू	खे	ले	गो	मो	लो	ण्ह	म्हा	ह्म
WI	KU	KHU	TU	NU	SU	LU	BHOO	SOO	KHE	LE	GO	MO	LO	AH	MHA	HMA

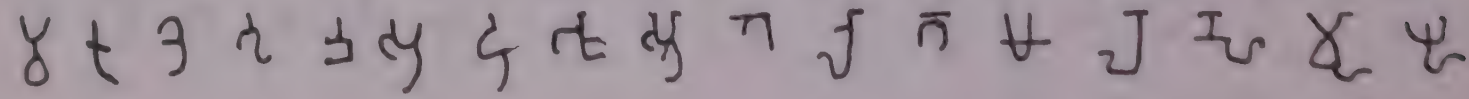

Inscriptions of Allahabad Gupta Ruler Samudragupta 4th Cen. A.D.

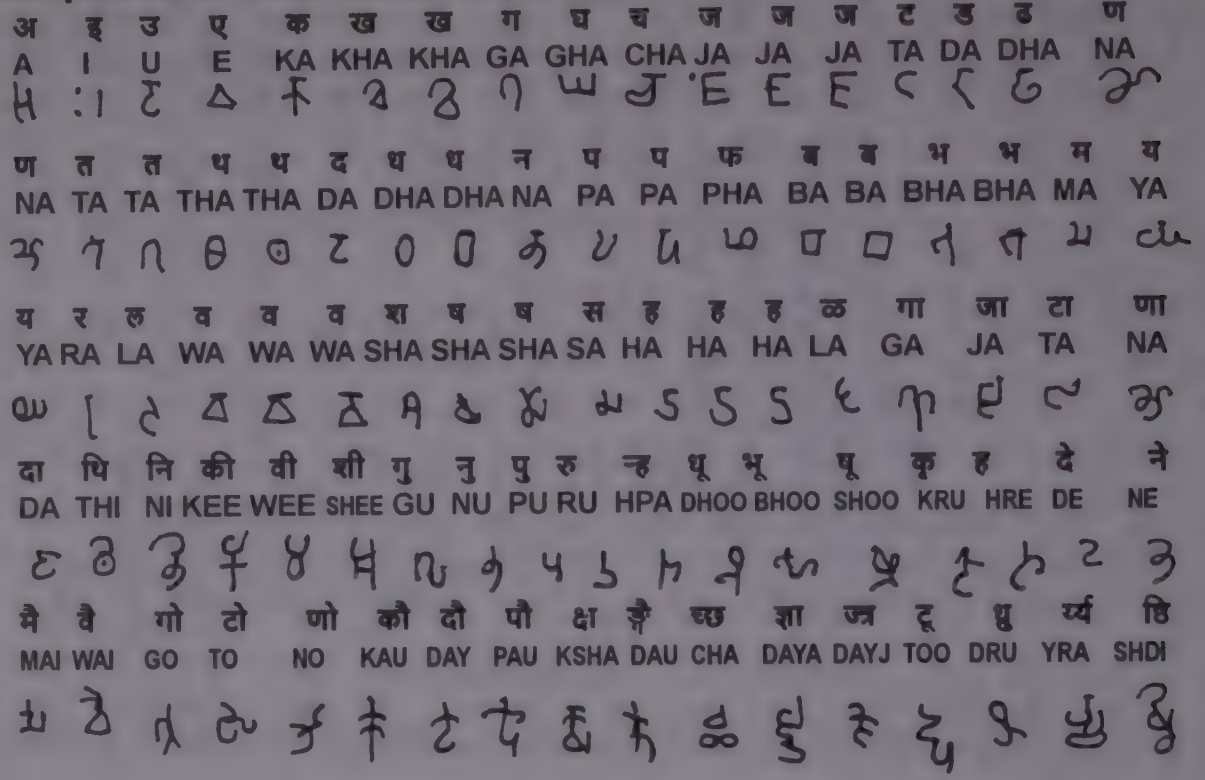

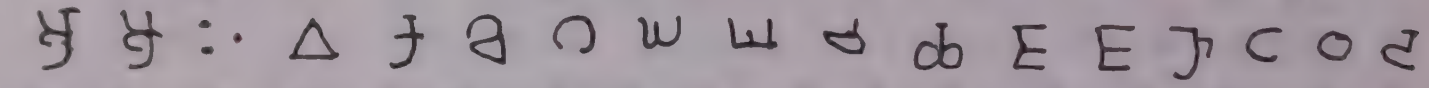

Girnar Inscriptions of Kshatrapas Ruler Rudradaman 2nd Cen. A.D.

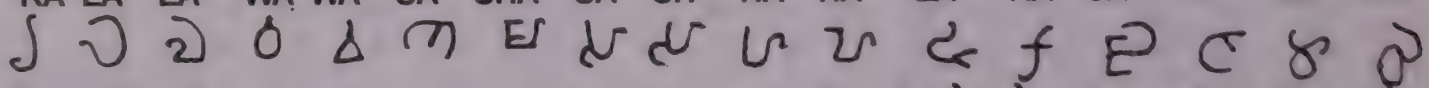

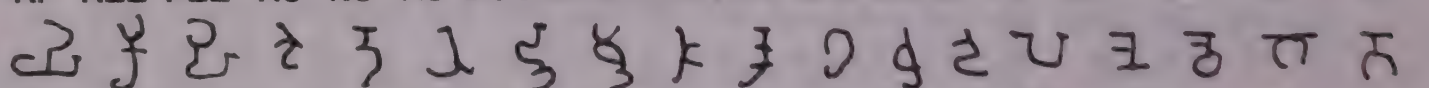

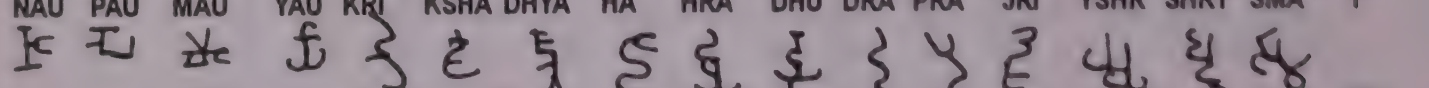

20 Exercise

1. Inscriptions of Devtak at Nagbhir Dist. Chandrapur.

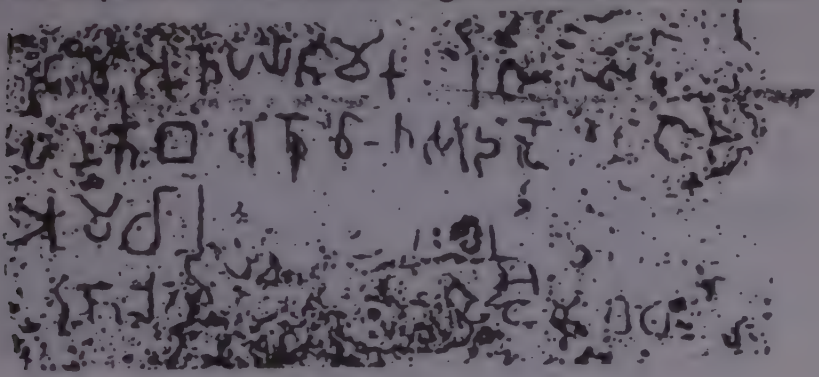

Ans : १) सामि अत्रेपयति चिंक (ब) रिस x स (प)
२) हनंतो बंधतो वा तस दसो x निधा
३) अमचा
४) रओ लेशो x x x x१० ४ बधे

2. Inscriptions of Pullar Dist. Nagpur.

Ans : १) वंदल्स

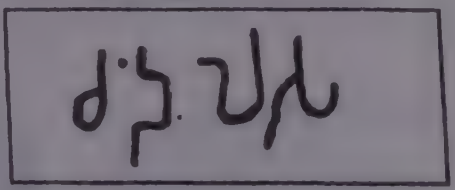

3. Cave Inscriptions of Bhuyari (Nagpur)

Ans : १) समय रिद्धी दानो

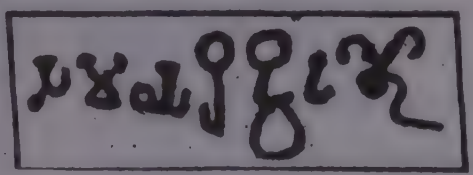

4.

Ans :Damasena

5.

Ans :Viradaman

6.

Ans :Damajadasri 3rd

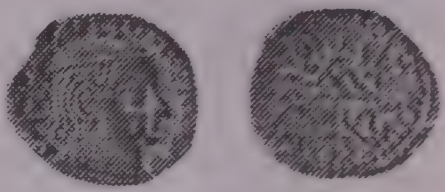

7.

Ans :Visvasena

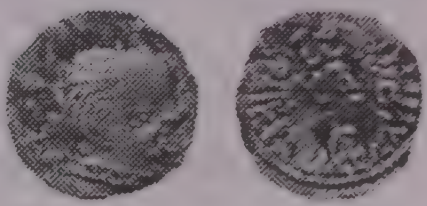

8.

Ans :Yashodaman 2nd

Question

1. Bhadravati Dist. Chandrapur (Terracotta)

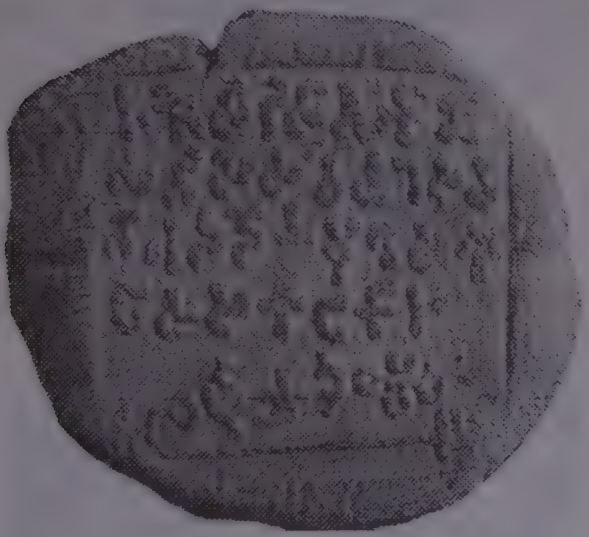

2. Bhadravati Dist. Chandrapur (Terracotta)

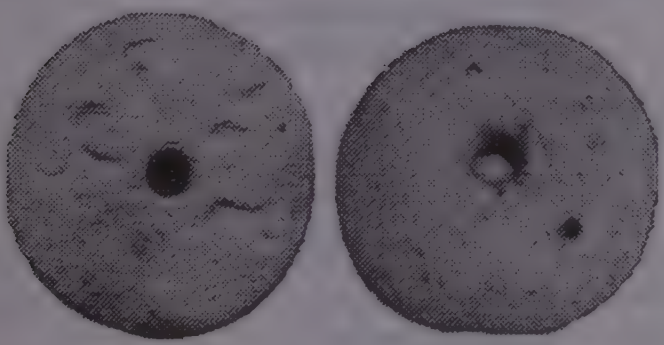

3.

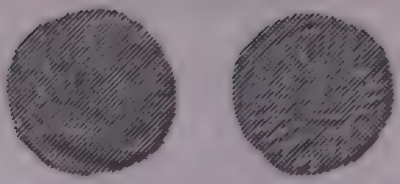

4.

5.

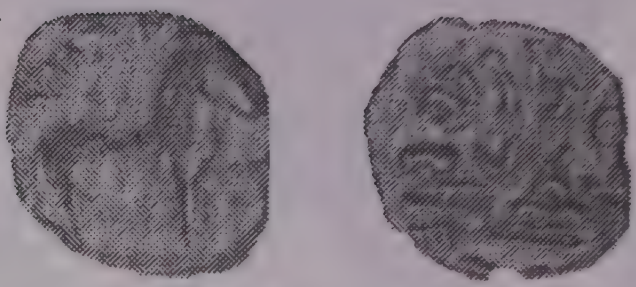

Ans : 1. Ramno Siri Satakakamni
sa tise samivachhare sava
tobhada donamukhasa ka
pisa sakatakaram

Ans : 2. ru da sa [-] sa

(1st and 2nd terracottas thanks for
Mr. Surendrasingh Gautam)

Ans : 3. Rudrasena 3rd
Ans : 4. Rudrasena 4th
Ans : 5. Addendum

Further Reading

१. सौ शोभा गोखले - पुराभिलेख विद्या, कॉन्टीनेन्टल प्रकाशन, पुणे

२. श्री. मुले, गुणाकर - भारतीय लिपीयों की कहानी, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली

३. डॉ. प्रदिप मैश्राम - विदर्भातील बुध्द धम्माचा इतिहास, मंगेश प्रकाशन, नागपूर.

४. राय बहादुर पंडित गौरीशंकर हिराचंद ओझा - भारतीय प्राचीन लिपी माला, साहित्य अकादमी, नई दिल्ली.

५. राजबली पांडे - भारतीय पुरालिपी, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद

६. डॉ. गो. म. देगलुरकर
डॉ. म. के. ढवळीकर
प्रा. रा. ज्ञा. गायकवाड - प्राचीन भारतीय इतिहास आणि संस्कृती, म.वि.ग्र.वि. मंडळ द्वारा पाप्युलर प्रकाशन, मुंबई - ०६

७. मा. शं. मोर - बुध्द धम्माचे संदेशवाहक भाग-१ व २, तिन चिनी प्रवासी कौशल्य प्रकाशन, हुडको औरंगाबाद-०३

८. F-Korovkin - The History of the Ancient world, Pragati Publishers, U.S.S.R. (Mascow), 2nd Ad. 1986.

९. डॉ. प्रदिप मेश्राम
प्रा. धिरज चौधरी - आओ ब्राम्ही लिपी सिखे, अखिल भारतीय ऐतिहासिक पुरातत्वीय बुध्दिस्ट अनुसंधान केंद्र मनसर जि. नागपूर.

१०. Dr. Amiteshwari Jha -
Dr. Dilip Rajgor - Studies in the Coinage of the Westem Ksatrapas, Published by Indian Institute of Research in Numismatic Studies Anajneri Dist. Nasik.

११.	Sivaramamurti C. -	Indian Epigraph and South Indian Scripts, Calcutta-1948.
१२.	S.B. Deo, Joshi J.P.-	Pauni Excavation, Nagpur-1972
१३.	Ahmad Hasan Dani -	Indian Palaeography, 2nd Ad. Munshiram Manoharlal Delhi - 1986
१४.	C. Upasak -	The History and Palaeography of Maurya Brahmi Alphabets, Patna - 1959
१५.	Shobhna Gokhale -	Indian Numerals - Puna 1956
१६.	Chief Editor - Chandrashekar Gupta Associated Editor Dr. Dilip Rajgor, Mr. Ashok singh Thakur	Nidhi Vol-II Oct. 2007
१७.	Editor Ashok singh - Thakur,	News Bulleting Voll No. 2, 3, 11 Pub lished by Chandrapur Coin Society, Chandrapur.

लेखक -

श्री. प्रदीप दत्तुजी वनकर, एल.एल. बी. की शिक्षा पूर्ण करने के उपरांत औद्योगिक प्रबंधन में विशेषज्ञता के साथ बैंगलोर से व्यवसाय प्रबंधन की उपाधि प्राप्त की, जाने-माने सिक्का संग्राहक एवं संशोधक है। चंद्रपुर मुद्रा परिषद के सह-सचिव होने के साथ ही इंटैक चैप्टर चंद्रपुर के आजीवन सदस्य हैं। इससे पूर्व इन्होंने" रेगुलर कमेमोरेटीव कॉईन्स एण्ड रिपब्लीक इंडिया" नामक किताब लिखी है। श्री वनकरजी कई सामाजिक संस्थाओं से सक्रिय रूप से जुडे हैं।

The Author

Shri Pradeep Dattuji Wankar earned his L.L.B And then did specialization in Industrial Management from Bangalore. He is a Collector of coins and Reseacher. He is It- Secretary of Chandrapur Coin Society & a Life Member of INTAC CHAPTER, Chandrapur. Previously, he has written a book titled " REGULAR COMMEMORATIVE COINS & REPUBLIC INDIA". Shri Wankar is an active member of many social organisation.

Chandrapur Coin Society

Price :
RS. 160/- in INDIA
US : $ 7.00 abroad